गुप्त साम्राज्य का पतन

467 स्कन्दगुप्त की मृत्यु– 550 विष्णु गुप्त अंत कारण।

1. अयोग्य एवं निर्बल उत्तराधिकारी।
2. शासन व्यवस्था का संघात्मक स्वरूप– अनेक सामंत मौखनिर, उत्तर गुप्त, परिवब्रजक, सनकानील, वर्णन, मैत्रक।
3. उच्चपदों का अनुवांशिक होना– हरिषेण पुत्र युवभूति– उदय गिरी शैव गुहालेख से ज्ञात होता है कि वीर सेन अपने पिता के पद पर था।
   पृथ्वीषेण– अपने पिता (करम दंडा) कुमार गुप्त।
4. प्रांतीय शासकों के विशेषाधिकार– महाराज की उपाधि, सुख सुविधा, राजा जैसा, सेना, करारोपण, प्रांतीय अधिकारियों की नियुक्ति– बिना राजा की सलाह के।
5. भूमि अनुदान– आय में कमी तथा दान ग्राही व्यक्ति केन्द्रीय सत्ता निर्बल होने पर राजा बन बैठै।
6. ब्राह्य आक्रमण– पुष्य भूति – हूण– स्कन्द गुप्त– तोस्भिान पुत्र मिहिर कुल– नर सिंह गुप्त कला।
7. बौद्ध धर्म का प्रभाव– मठों बिहारों को दान, ह्वेन सांग का ही वरण, मिहिर कुल की रिहाई।
8. वैवाहिक सम्बंधों का अभाव।
9. आंतरिक कलह।
10. सांस्कृतिक उन्नति से विलासिता–
11. नये शक्तिशाली राज्यों का उदय– थानेश्वर वर्द्धन, कन्नौज में मौखरि, कामरूप, वर्मन, मानवा में यशोधर्मन– H.C. चौधरी पतन का तात्कालिक मुख्य कारण।

R.C. **मजूमदार–** गुप्त साम्राज्य के पतन में उन्हीं परिस्थितियों का योगदान रहा जो इसके पहले मौर्य साम्राज्य को तथा बाद में मुगल साम्राज्य को धराशायी करने में सहायक रही।

————————————————————

स्वर्ण युग

प्रजाहित–

1. जूनागढ़ लेख– स्कन्द गुप्त ने सुदर्शन अंतिम युनानी था।
2. नालंदा बौद्ध विहार।
3. सूर्य किरणों से जल ग्रहण करना, उसी प्रकार कर
   ख. ग्वाले से उपमा– स्कन्द गुप्त– जिस समय वह शासन कर रहा था कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं था, जो धर्मच्यूत हो दुखी हो दरिद्व हो, व्यसनी हो, लोभी हो अथवा सताया गया हो। **–जूना गढ़ अभिलेख**
4. हिन्दू संस्कृति व सभ्यता का चरम उत्कर्ष शीर्षक–

- राजनैतिक एकता का काल।
- महान राजाओं का काल।
- श्रेष्ठ शासन व्यवस्था का काल।
- साहित्य विज्ञान एवं कला के उत्कर्ष का ज्ञान।
- भारतीय संस्कृति के प्रचार और प्रसार का काल।

फाहयान– वृहत्तर भारत– तंत्री का भेद

सर्व द्वीप वापसी कि– तात्पर्य दक्षिप पूर्व एशिया से–

साहित्य

कालीदास– विशाखदत्त (मुद्राराक्षस, देवी चन्द्रगुप्तम)

भरणि की रातार्जुनीयम अमर सिंह –भास

शुद्रक– मृच्छकारिक – असंग वसुवंध सिद्धसेठ, गणितज्ञ एवं ज्योतिषी, आर्यभट्ट ब्रह्म सिद्धांत, भास्कर प्रथम, धन्वंतरि (वैट, चन्द्र द्वितीय) नवीनतम कम।

————————————————

गुप्त कला

स्थापत्य, मुतिकला, चित्रकला

1– स्थापत्य– मंदिर निर्माण, ऊंचे चबूतरों पर सीढ़ी–

1. तिगवांका विष्णु मंदिर।
2. भूमरा का शिव मंदिर।
3. नचना कुठारा का मंदिर।
4. देव गढ़ का दशावतार मंदिर।
5. ढोह व भीतर गांव का मंदिर।

–सारनाथ का मेख स्तूप

2– मूर्ति कला– कुषाण कालीन नरगुप्ता का समापन गंधार का प्रभाव नहीं।

अध्यात्मिकता, भावुकता, भद्रता तथा शालीनता से ओत–प्रोत।

–सारनाथ की बुद्ध मूर्ति, मथुरा की बुद्ध मूर्ति, सुल्तान में बुद्ध मूर्ति

3– चित्रकला– पूर्णता को प्राप्त कर चुकी थी। (अग्रवाल)

– अजंता (औरंगाबाद) बाघ को गुफा में

– अजंता 1–2, 9–10, 16–17 वी गुप्त कालीन

16 वी मरणा सन्न राजकुमारी, 17वीं माता शिशु (Mother Child)– बुद्ध की पत्नी पुत्र को बुद्ध को सौपते हुए।

बाघ– विन्ध्यांचल पर्वत को काटकर गवालियर।

————————————————

शाक्त

(1) नारी श्रद्धा व शक्ति की प्रतीक– महिवासुर मर्दिनी– काली कराली चंडी, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती आदि।

ऐतिहासिकता– खैघवयुना– मातृदेवी– शैव सेघनिष्ठर सम्बंध देवी की उपासना।

तीन प्रकार–

1. शान्त व सौम्य रूप – उर्मा पार्वती लक्ष्मी।
2. उग्र व प्रचन्ड रूप – दुर्गा कपाली, चन्डी भैरवी (कायालिक व कालय)
3. काम प्रधान रूपी – आनंद भैरवी ककित्य त्रिपुर सुंदरी।

तीनों के अलग–अलग मंदिर–

1. वैष्णव देवी का मंदिर – (जम्बू काश्मीर) शारदा की मूर्ति। (सौम्य, मेहर सतना) (M.P.)
2. उग्र रूप – काली मंदिर कलकत्ता
3. काम प्रधान – कामाच्छा मंदिर

सिद्धान्त– शाक्त– मदिरा, मांस, मत्स्य, मुद्रा तथा मैथुनकी उपासना द्वारा मुक्ति में विश्वास करते है।

————————————————————

गुप्त वंश

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

"महाराजाधिराज श्री समुद्र गुप्तस्य पुत्रेण महादेव्यां दत्ता देव्यां मुत्यघेन"

(1) राज संवत्सरे पंचमे। (2) तात्पादपरिगृहीत

वैवाहिक सम्बंध

1. जिस प्रकार हर्थक वंशी बिम्बिसार तथा गुप्त वंशी चन्द्रगुप्त ने वैवाहिक सम्बंध स्थापित अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया था, उसी प्रकार चन्द्र द्वितीय ने भी अपनी समकालीन शक्तियों से वैवाहिक सम्बंध स्थापित कर अपनी स्थिति को मजबूत किया। **—H.C. चौधरी**
2. R.C. मजूमदार— शक्तिशाली राज परिवारों से वैवाहिक सम्बंध गुप्तों की सम्राज्यवाद नीति का एक अंग था जिसका चन्द्र द्वितीय ने अपरिपक्व पालन किया।

नाग वंश से— इस सम्बंध द्वारा गुप्त नरेश को अपनी नवस्थापित सार्वभौव सत्ता को सुदृढ़ करने में अवश्य सहायता मिली होगी। **—R.C. मजूमदार**

(2) वाकाटकों से सम्बंध

1. B.A. स्मिथ के अनुसार— वाकाटक महाराज एक ऐसी भौगोलिक स्थिति में था कि वह उत्तरी भारत से शकों के गुजरात तथा सौराष्ट्र के राज्य पर आक्रमण करने वाले किसी को भी लाभ या हानि पहुंचा सकता था। विधवा प्रभावती गुप्ता के दो पुत्र— दामोदर गुप्त व दिवाकर सेन थे।
2. R.C. मजूमदार— विधवा रानी ने अपने पिता को हार सम्भव सहायता प्रदान किया और उसी के काल में चन्द्रगुप्त ने गुजरात तथा कठियावाड़ा को विजय किया।

पूना ताम्र लेख में— प्रभावती ने अपने पिता को पृथिव्याय प्रतिरतः तथा सर्व राजोच्छेत्र नामक विरूद को अंकित कराया था।

3. कदम्ब वंश— तालगुण्ड अभिलेख— काकुस्थ वर्मा नामक कदम्ब वंशी नरेश भी राज कन्या गुप्त कुल में ही था।

भोज का श्रंगार प्रकार— कालिदास दूत बन कर गये थे।

रिपोर्ट– इस समय कुंतल नरेश अपने राज्य का भार आप के उपर सौंप दियाहै और स्वयं स्मित हास्य के कारण मधुर क्रांति से युक्त दीर्घ कटाक्षों वाली प्रियाओं के सुरापान ससुंगधित मुखों का पान कर रहा है।

————————————

विजयें

(1) शक विजये

तिथि– शकों की अंतिम मुद्राओं पर 31 तिथि– इकाई की संख्या नष्ट जो 0–9 के बीच अर्थात 310–319 A.D

शक सम्वत का चलन 78 A.D.= 310+78–388A.D, 319+78 = 398 कि बीच– शकराजा रूद्र सिंह तृतीय

परिणाम– साम्राज्य सीमा– गुजरात कठियावाड पश्चिमी मालवाड़ तक। भडौच का बंदरगाह मिला।

R.C. मजूमदार–पाश्चात्य विश्व के साथ भारतीय व्यापार के बढ़ जाने के कारण पश्चिमी सश्यता एवं हमारे देश की संस्कृति का निकट सम्बंध हुआ।

(2) बाहली विजय

मेहरौली अभिलेख

1. भंडारकार दशरथ शर्मा, D.C. सरकार– महाभारत व रामायण – पंजाब का वह भाग जो व्यास नदी के दोनों तटों के आसपास स्थित था, बाहहीक नाम से जाना जाता है– कैकेय– भारत
2. वंग विजय–
3. दक्षिणी विजय–
4. काश्मीर विजय – P.C. गुप्ता

शासन व्यवस्था

फाहियान व कालिदास के प्रसंग

सांस्कृतिक उपलब्धि

1. अनुभुति के अनुसार व विद्वानों की मंडली।
2. चन्द्र शेखर की काव्य मीमांसा– उज्जयिनी के विद्वत्परिषद।
3. कालिदास– स्वभाव से परस्पर विरोधी स्थानों में रहने वाली लक्ष्मी एवं सरस्वती ने इस नरेश में अपना निवास स्थान बनाया।

———————————————————————

कुमार गुप्त– 415–455

पिलसाद– कुमार गुप्त (धुव्रदेवी) राजा हुआ।

मंदसौर– ऐसी पृथ्वी

गृह युद्ध– गाविन्द गुप्त से– R.G. भंडारकर

यह वैशालीया मालवा का गवर्नर था – By R.C सरकट व R.C. मजूमदार

विजय–

1. व्यार्ध बल पराक्रम के आधार– H.C. चौ0 द0 विजय
2. B.K. मुखर्जी खड निहंता(गैड़ा)– आसाम विजय
3. वाकाटकों से– अप्रिय सम्बंध

पुष्यमित्र जाति का आक्रमण– अंतिम दिनों में–

1. भितरी स्तम्भ लेख– "पुष्य मित्रों की सैनिक शक्ति और सम्पति बहुत अधिक थी। इस आक्रमण से गुप्त वंश की लक्ष्मी विचलित हो गयी तथा स्कन्दगुप्त को पूरी रात पृथ्वी पर जाग कर बितानी पड़ी। स्कन्द गुप्त ने पुष्य मित्रों को पराजित कर– उनके राज रूपी पीट पर अपना बांया पैर रखा।"

अश्व मेष यज्ञ– मुद्रा– अग्रभाग पर – अश्व व सूप अंकित है।

पृष्ठ भाग– चरम धारिणी राज महिषी तथा अश्व मेघ महेन्द्र अंकित है।

सहिष्णु था– नालंदा महाविद्या की स्थापना।

स्कन्द गुप्त 455–467

प्रारम्भ की दशा– अस्त व्यस्त– पुष्य मित्रों में आक्रमण से

हुण आक्रमण– 11 हुण नेता– खुशनवाज था।

हुणों के साथ युद्ध क्षेत्र में उतरने से उसकी भुजाओं के प्रताव से पृथ्वी कांप उठी और भीषण आवर्त(बवंडर) खड़ा हुआ। **– भि0 स्तम्भ लेख**

अन्य साक्ष्य– जुनागढ़ लेख– पराविज हुण–गुण गान अपने देश में चन्द्र गोविन के व्याकरण से–जेर्टो ने हुणों को जीता।

स्थान– B.K. सिन्हा, गंगा घाटी में– गंगा ध्वनि के कारण निश्चित स्थान पश्चिमी भारत रहा होगा– तिथि 460 में ।

2. नागों से युद्ध– जूनागण लेख– स्कन्दगुप्त की गलन ध्वज अंकित रखना– नागरूपी उन राजाओं का मर्दन करने वाली थी जो मान और दर्प से अपने फन उठाये रहते थे।
3. वाकाटकों से युद्ध– भालवायर अर्धपत्य के कारण

–सुदर्शन झील का निर्माण– चक्रपालित द्वारा धर्म सहिष्णु– कुशल शासन प्रबंध कर्त्ता

मूल्यांकन– अपने वंश का सिरभौर गुप्त वंश का महत्वपूर्ण वीर, कर्तिकेय–मयूर।

————————————————————

8

चन्द्र गुप्त मौर्य

1– विदेशी शासन से प.ड. भारत की मुक्ति– मुद्रराक्षस परिशिष्ट पर्वन– राजा पोरस से सहायता। 325B.C में सिन्धु घाटी की झील पर फिलिप द्वितीय की हत्या। 317 B.V में अंतिम सेना नायक यूद्धोमस का त्याग।

2– नंदों का विनाश– भा0 साक्ष्य द्वारा।

जस्टिन– सिकन्दर से सहायता, नंद शासक के विरूद्ध।

H.C. चौधरी– समता– राणा सांगा– इब्राहिम लोदी।

वायु पुराण– ब्राह्मण कौटिल्य नव नंदो का नाश करेगा और कौटिल्य ही चन्द्रगुत का राज्याभिषेक करेगा।

समर्थन– भगवत पुराण, मत्स्य पुराण, अर्थशास्त्र, मुद्राराक्षए कथा सरित सागर, चन्द्रगुप्त को सकल जम्बुदीप का राजा बनाया।

मिलिन्द पन्धे 76 "भपत्साल नंदो का सेनापति था। इस युद्ध में विहितों की संख्या 100 कोटि थी। 10000 हाथी, 1 लाख घोड़े आदि। भयंकरता का अनुमान–"

3– सेक्यूकल से युद्ध– सेल्यूकस व एन्टीगोनस से गृह युद्ध– 305 B.C. एवियन– सिन्धु घाटी दोनों साम्राज्य की सीमा थी।

4– पश्चिमी भारत की विजय– सुराष्ट्र प्रदेश, पुष्य जुरत वैश्य गवर्नर सुर्दशन झील का निर्माण। सोपारा से अशोक का अभिलेख।

5– दक्षिणी भारत– अशोक के अभिलेख, सिंहपुर, ब्रहमगिरी, जरिंग रामेश्वर, मास्की मुरी, सीमायें दक्षिण में– अशोक, चोल्यपाझउ को लपुत्र सतियपुत्र, जैन ग्रंथ, भउवाहुचरित, श्रवण वेल गोला।

———————————————————

चोल

(1) राजाराज प्रथम– 985–1015 तक

1. पाण्डय केरल– मैसूर के गंगों तथा नोलम्बो।
2. सिंहलद्वीप– महेन्द्र पंचम
3. चालुक्य संघर्ष– बेगी शाखा व कल्याणी शाखा।

- वेगी शाखा– राजा भीम– अपदस्थ राजकूमार– विमलादित्य व शक्तिवर्मन को शरण –भीम ने चालों लाभ तोन्ड मंडक पर, राजराज ने शक्ति वर्मन को वेगी नरेश बनाया।
- कण्डाणी शाखा– का शाखा सत्याक्षय ने वेगी पर आक्रमण कर दिया।

राजाराज ने दो सेनायें भेजी–

1. राजेन्द्र प्रथम के नेतृत्व में– कल्याणी वनवासी व
2. वेगी।

सत्याश्रय कठिनता से कल्याणी को बचा सका। वेगी चोलों का संरक्षित राज्य बन गय।

4. मालद्वीप पर आक्रमण

(2) राजेन्द्र प्रथम– 1015 A.D

1. पाण्ड तथा केरल को पराजित कर राज्य बनाया।
2. सिंहल नरेश– महेन्द्र को बंदी बना कर चोल राज्य का जहाँ उसकी 12 वर्ष बाद मृत्यु हो गयी। पूरे सिंह पर अधिकार कर लिया।
3. चालुक्य संघर्ष

1– वेगी शाखा'– विमलदित्य के दो पुत्र– विजयादित्य व राजराज

गृहयुद्ध
विजयादित्य का साथ– कलयाणी का जय सिंह तथा कलिंग के गंग दे रहे थे।
अतः राजेन्द्र ने कल्याणी तथा वेगी पर साथ–साथ हमला कर जयसिंह और विजयादित्य को हराया।

4. कलिंग के गंगों को पराजित किया।

5. गंगाधारी विजय– पालो का शासन– महीमाल पराजित हुआ– इस अभियान का उद्देश्य पार्वत जब का गया, पालों ने सिर पर लाद कर गंगा जल, चोलराज्य में पहुंचाया।

उपाधि– गंगैकोन्ड राजधानी– गंगाई कोन्ड चोल पहुंचा।

प्रशासन

1. उड्डन कुट्टन(राजा के पास रहने वाले अधिकारी)– उच्चधिकारी को नील कंड शास्त्री।
2. प्रांत– विभाग– मडलम, वडनाडू, नाडू, कुरिम्भ, ग्राम।

नगरम, व्यापारिक नगरों को–अलग प्रशासन– श्रेणी व्यवस्थी द्वारा।

ग्राम प्रशासन

ग्राम की संस्था (1) सभा तथा उर सा0
सभा के तहत समिति, जिन्हें वारियेम कहा जाता है।
सम्बत्सर वारियम– यह सभी समितियों की देखभाल करती थी।

————————————————

हर्ष

क्या अंतिम महान शासक था। नहीं।

तर्क 1– कन्नौज का यशोवर्मन – गौड़वहों से ज्ञात होता है कि– "यशोवर्मा– विन्ध्यावासिनी की पूजा किया।"

मगध के शासन पर चढाई किया– बंगाल को जीता पुनः दक्षिण के राजाओं को जीता तथा मलयगिरी को पार किया। उसने पारसीकों को पराजित कर भगा दिया। राज स्थान श्रीकंह तथा कुरूक्षेत्र कों पार करते हुए अयोध्या पहुंचा। मंराचल के निवासियों ने उसकों स्वीकार किया। उसने हिमालय क्षेत्र की विजय की।

2– प्रतिहार नरेश भोज–राष्ट्रकूटों तथा पालों को पराजित किया था। गुजरात के आस–पास के भाग को जीत लिया था। उत्तर पश्चिमी में उसका साम्राज्य पंजाब तक विस्तृत था, अवध तथा गोरखपुर से भी उसके लेख मिलते है।

चाट्सु लेखानुसार– उसने उत्तर के सभी शासकों को जीत लिया था तथा दक्षिण में नर्मदा नदी तक उसकी सीमा विस्तृत थी। कन्नौज राजधानी थी।

3– इसी प्रकार– पालनरेश– धर्मपाल तथा काश्मीर नरेश कलितादित्य हर्ष से कम शक्तिशाली न था।

———————————————————

कनिष्क

विजय– सिक्कों के अन्दर।

1. पूर्वी भारत– सारनाथ से–
2. विहार– बक्सर, वैशाली, कुमहार, बोधि गया।
3. पन्तगालि– तामलुक, महास्थान
4. उड़ीसा– धुरी गंजाम, शिशुपालगढ़, मयूर कला, नवीन खुदाई, वलिया जिले के खैराडीह नामक स्थान पर कौशाम्बी तथा भावस्ति से कनिष्क की झील मिली है।
5. चीन से युद्ध– 94 A.D.

चीनी राज्य – हनवंशी– सेनापति– पानचाऊ। विवाह का प्रस्ताव– कनिष्क खोतान पर अधिकार।

6. पश्चिमी भारत की विजय– दोलेख–जि्दो (उद्देशाव) सुई विहार, कविशा व काश्मनी।
7. दक्षिणा भार– संधि से कनिष्क का लेख।

मथुरा कला

महाराज राजाधिराज, देव पुत्रों कनिष्कों। मथुरा से प्राप्त मूर्ति पर बुद्ध तथा बोधिसत्व की मूर्ति। राजा की मूर्ति तथा हिन्दु व जैन मूर्तियों का भी निर्माण हुए।

जैन मूर्ति दो प्रकार–

1. खड़ी मुद्रा में– 2. बैठी हुई

———————————————

समुद्र गुप्त

भूमिका–

1. राजाधिराजों पृथिवी विजित्य दिवं जयति वह समस्त भूमंडल की विजय करके स्वर्गलोक की विजय करता है। **– अश्व मेघ सिक्कों पर**
2. समस्त पृथ्वी को जीत लेने के बाद उसकी कीर्ति भूमंडल में विचरण करती हुई इन्द्रलोक में पहुंच गयी थी। **– प्रयाग प्रशस्ति**
3. सर्व राजोच्छेता– विरूद्ध
4. भण्डारकर– उत्तरा पक्ष प्रथम विजय
5. चौधरी– धर्म विजय, रधुवंश, महेन्द्र पर्वत के राज्य डुवीक (संघ) विष्णुगोय के नेतृत्व, केल्लोर झील लेवी– आर्थिक बंदरगाहों से व्यापार के लिए।

   वाकाटक सम्बंध– प्रसभेद्धरण, ग्रहमोक्षानुग्रह
6. पश्चिारी कृत सर्वाटविकाज्यस्य (शपक्ति)
7. सीमावर्ती राज्य– 22 वीं पक्ति– ये उ0पूर्वी, पूर्वी तथा पश्चिमी सीमा पर थे, वे समुद्र गुप्त को सभी प्रकार के करों को देते थे। उनकी आज्ञाओं का पालन करते थे तथा प्रणाम करने के लिए राजधानी में उपस्थित होते थे।

   नौर गणराजयः पश्चिमी सीमा

   मात्कव आर्जुनायन, यौधेय भद्रक आभीर

   प्रार्जुन सन कानीक काम खटपरिक
8. विदेशी शक्तियां(23–24)– के स्वयं को समुद्र गुप्त की सेवा में उपस्थिति करते थे, कन्याओं का उपहार देते थे तथा समुद्र की मुद्रा को चलाते थे। दैव पुत्र (कुषाण)– किदार कुषाण, शक– रूद्र सिंह द्वितीय।

मुदण्ड– पश्चिमोत्तर

सिंहल– मेघ वर्ण उपहार समुद्र को।

आदि सर्वद्रीपवासिभिः

जावा– तंत्रीकामन्दक– ऐश्वर्य पाल

———————————————

12

वातापी के चालुक्य

अजंता 1–2, 9–10, 16–17 (गुप्त काल)

1–2 गुफा– इस पर फारस के राजदूत का चित्र अंकित है जो पुरूकेशिव के काल में आया था। पु0 द्वितीय को दूत का स्वागत करते दिखाया गया है।

पुल के शिन II

दकन या दक्षिण पथ– नर्मा के दक्षिण व तुंग भद्रा के उत्तर का भाग–

तुंगभग्रा के दक्षिणवां भाग – सूदूर दक्षिण

6वीं शताब्दी के मध्य से – 8वीं शताब्दी के मध्य।

वातापी के चालुक्यों – दक्षिण पथ पर

संस्थापक युक केशिन प्रथम – कदम्ब की अधीनता में थे।

(1) कीर्ति वर्मन (2) मंगले

पुल के शिन II –जब पुल के शनि ने मंगकेश का छत्र भंग किया तब संसार किुल से ढ़क गया। ऐहोल अभिलेख

1. अत्याधिक गोविन्द (सामंत)
2. वनवासी के कदम्ब–
3. मैसूर के गंग– गंग नरेश दुष्वनीत ने अपनी पुत्री का विवाह पुत्र केशिन से किया।
4. लाट, मालव, गुर्जरों ने अधीनता स्वीकार की।
5. हर्ष से संघर्ष।
6. कलिंग तथा दक्षिण कोशल व पिष्टपुर ने अधीनता स्वीकार किया।
7. कांची के पल्लवों से संघर्ष–

महेन्द्र वर्मन– अनेक युद्धों को विजेता पुलकेशिन ॥ की सेनाओं द्वारा उठी हुई धुल के कारण पल्लव नरेश का प्रताप आच्छादित हो गया तथा व मांचीपुर की दीवारों के पीछे छिप गया।

शासनकाल– 610–11– 642 तक

ध्वेनसांग प्रशंसा– पारसी शासक खुशु II के दरबार में दूत आदान–प्रदान

–By अरब लेखक तानवी

————————————————

13

हर्ष

प्रस्तावना

दिल्ली तथा पंजाब के भू–भाग पर श्रीकंठ पनपद थानेश्वर इसी के तहत एक प्रदेश थ। पुष्य भूमि वर्दन साम्राज्य की स्थापना।

हर्ष और दक्षिण विकास– मयूर श्लोक– गन्ने अन्ने लेख में आधार नी0 शास्त्री –चोल कुंतक राज्य तथा कांची निकाय–

सम्भावना पुल केशिन ॥ की मृत्यु के बाद हर्ष वर्द्धन को सभी देवताओं का सम्मिलित अवतार कहा गया है।

– महामोक्ष परिष्द– बुद्ध, सूर्य व शिव की बारी–बारी हर्ष द्वारा पूजा।

– उसकी कविता का शब्दों द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता।

– वह काव्य कथाओं में अमृत की वर्षा करता था।

– वाण, मयूर, मातंगदिवाकर, नालन्दा– 1 मील लम्बा, 1/2 मील चौड़ा, 8 बड़े कमरे, 300 छोटे कमरे।

————————————————

सामाजिक परिवर्तन 1800–1900

1. सामंतवाद का विकास।
2. वर्णव्यवस्था की कठोरता व नवीन वर्गो का उदय
3. वैश्य वर्ग का पतन व शुद्र वर्ग का उत्थान।
4. जातियों तथा प्रजातियों की संख्या में वृद्धि।
5. कायस्थ
6. महिलाओं की स्थिति।

राजदूत

1. सामाजिक विघटन का सर्वाधिक प्रभाव ब्राह्मणों पर पड़ा। सारस्वत कान्यकुब्ज मैथिक गौड़ गुखोपाध्याय व दोपाध्याय, चट्टोपाध्याय।
2. क्षत्रिय जाति में परिवर्तन, चंदेल, गडरवाल, चौहान, चालुक्त आदि।
3. सबसे ज्यादा शुद्रों में वर्गीकरण– शिल्पी, बढ़ई, कुम्हार, धोबी, सूतक, जुलाहा, तेली, चमार, मछुआरा, चन्डाल, आदि। –(अछूत– S.C.-S.T)

परमार, गुहिक, मेव, प्रतिहार

———————————————

शुद्रों की मात्र आर्थिक स्थिति में ही परिवर्तन हुआ न कि सामाजिक व धार्मिक, इसका कारण कृषि (सामंत) व व्यापार का अपनाया जाना था। वैश्यों की आर्थिक स्थिति में गिरावट का कारण– व्यापार वाणिज्य तथा शिल्प का ह्रास तथा कृषि कर्म का करना था।

———————————————

15

चोल प्रशासन

उड्ड़न कुट्टन– अधिकारी तंत्र– नीलकंठ शास्त्री– नाट्टार
मंडलम में केन्द्रीय प्रतिनिधि – नगरम– नगर शासन
वारियम (समिति) – सम्बत्स वारियम।

चोल प्रशासन पर शास्त्री का विचार

एक योग्य नौकर तथा सक्रिय स्थानीय संस्थाओं के बीच जो विविध प्रकार से नागरिकता की भावना से पोषण थी। शासन निपुणता तथा शुद्धता का एक उच्च स्तर प्राप्त कर लिया गया था, जो सम्भवतः किसी भी हिन्दू राज्य द्वारा प्राप्त सर्वोच्च स्तर था।

सामंती प्रथा

पूर्व मध्य कालीन समाज में एक विशिष्ट वर्ग व विशिष्ट शासन व्यवस्था– सेना के माध्यम से भू–खंडो पर अधिकार– राजा की सैनिक सहायता R.S. Sharma
उत्पत्ति प्राचीनता– शक, कुषाण काल से ही – B.H.S यादव

(1) R. थापर– गुप्त व हर्ष के बाद– विकेन्द्रीय व प्रादेशिक राज्यों के उदय के कारण माना है।
(2) B.H.S यादव अवरूद्ध अर्थ व्यवस्था– व्यापार तथा वाणिज्य व शिल्प में ह्रास। अतः अर्थ व्यवस्थ का कृषि पर व भूमि पर निर्भर होना जिससे भू सम्पन्न कूलीनों का जन्म हुआ।

सामंत कला– शांति व्यवस्था प्रशासन राजस्व वसूली–

सैनिक सेवा, वफादारी व निष्टा का वचन

मुद्रा का प्रचलन, स्मारकों में राजा का नाम– शादी करना। शादी समारोह यज्ञ के अवसर पर दरबार में उपस्थित होना।

– शांति काल में सैनिक परे
– राजाओं जैसी सुख सुविधा अपने क्षेत्र में।

हानि–

1. राजा का प्रभाव कम– निर्बल शक्ति जनता से कटाव
2. भूमि विखंडन– सामंत उपसामंत
3. कराधिक्य बिचौलि आदि बेगम।
4. विकाषितः न कि विकास कार्य

———————————————————————

16

मौर्य कालीन अर्थव्यवस्था

(1) वार्ता–

1– कृषि– नये क्षेत्रों की सफाई व विकास– विकसित कराधान– अर्थशास्त्र में करकी लम्बी भूमि के प्रकार।

1. राजकीय भूमि– दास, मजदूर, कैदी कार्य करते थे।
2. सीताध्यक्ष राजकीय भूमि पर खेती करवाता था।

करद कृषक भूमि– कराधान– व्यक्तित्वता (रैय्यत बाड़ी)
कौटिल्य उपज = 1/2 यदि कृषक अपने साधन से खेती करता था।
उपज =1/3, 1/4 यदि राजकीय साधन सहायता से प्राप्त ।
समाघर्ता (राजस्व मंत्री) अधीन 26 अध्यक्ष
सनिघाता – कोषाधिकारी
सीता – कृषि आय

सिंचाई की व्यवस्था– सुदर्शन झील का निर्माण ? जूनागढ़ (सेतुबंध) सिंचाई व्यवस्था की।
पशुपालन, वाणिज्य व्यापा, शिल्पी, N.S.P.W. अशोक के अभिलेख।
धातु क्रिया– खनन, गलन, ढालन, नियन आदि।
नियंत्रण– समस्त निर्मित वस्तु पर कर, मूल्य निश्चित किया जाता है। दिनांक अंकित की जाती थी।
व्यापार– विदेशी व्यापारी सुरक्षा प्रबंध यूनानी शासकों से सम्बंध।
मुद्रा– आहत मुद्रा, कार्षापण, पणे माषक कांकणी। मुद्रा निर्माण– सरकारी

———————————————

17

स्त्रियों की दशा 1800–1200 AD

1. मात्र धन सम्बंधी अधिकार– विधवा को उसके मृत पति का उत्तराधिकारी मान लिया गया– स्त्री धन में अब उत्तराधिकारी तथा विभव की सम्पत्ति को भी शामिल कर लिया गया। मिताक्षरा तथा दाय भाग दोनों में स्त्री को मृत पति की सम्पत्ति का पूर्ण उत्तराधिकारी घोषित किया।
2. अन्य क्षेत्र अभूत पूर्व गिरावट–

क. उपनयन की समाप्ति ख. बाल विवाह 8–10 शुद्धों जैसी स्थिति।
आठवी शती में विधवाओं के मुंडन की प्रथा का प्रबंध।
शतपथ ब्राह्मण– अर्धागनी
महाभारत– स्त्री ही गृह है– विवाहित के घर अरण्य है।
जायेदस्तम, देवदासी प्रथा।

उत्तर वैदिक काल

समाज–

1. वर्ण व्यवस्था में कठोर–
2. अन्तेष्टि के अलग–अलग टीले– शतपथ ब्राह्मण।
3. समोपधन–आईये, आओ, जल्दी आओ, दौड़ के आओ।
4. यज्ञापवीत– सूत्र$_{(91)}$ सन (आईये), मूल(वैश्य)
5. चारों वणों के कर्त्तव्यों का स्पष्टीकरण–

शतपथ ब्राह्मण

– अश्पृश्यता का उदय नहीं– शुदों की दयनीय स्थिति, स्त्रियों की दशा में गिरावट, मंत्रायिणी संहिता में जो पासा ओर सुरा के साथ तीसरी बुराई।
"पुत्री ही सब दुखों का स्त्रोंत है तथा पुत्र ही रक्षक है।" –स्तोप ब्राह्मण
–ब्रहमयणी उपनयन वेदाध्यनगांगी याज्ञम्बसंवाद– वृहदारण्यक उपनिषद।

———————————————————

पल्लव संस्कृति

सातवीं शताब्दी में दकन का सूदूर दक्षिण में तीन शक्तियों का उदय कांची के पल्लव बातायी के चाणुक्य, मंदुरा के पांडय।

पल्लव राजनीतिक सांस्कृतिक प्रशासन धार्म साहित्य कला।

आर्थ व प्रबिद्ध संस्कृति का समिश्रण — R. थापर

देशज संस्कृति का भी जन्म पल्लव काल में ही हुआ।

प्रारम्भिक शिलालेख– प्रकृति वाद में संस्कृति। संस्कृति की विशेषता– आर्य व द्रविण का संमिश्रण– देशज तमिल संस्कृत की उत्पत्ति, शैव व वैष्णव धर्म का उत्थान, जैन बौद्ध का ह्रास। शक्ति धारा की उत्पत्ति, ब्रह्मणों को भूमिदान व विशेष किया द्रविड शैली तक विदेशी उपनिवेश।

शैल नयनार वैश्णव अलवार से बौद्ध पराजित– शंकराचार्य मन्त विलास प्रहसन में बौद्ध धर्म का मजाक, महेन्द्र।

धर्म सहिष्णु– ह्वेन सांग (कांची में) कांची में 100 विहार तथा 10,000 बौद्ध निवास करते थे।

ब्राह्मण की वर्रेण्यस्थिति कारण– ब्राह्मण धर्म की प्रतिष्ठा, यज्ञ मूर्तिपूजा, अवतारवाद आर्य, भूमिदान।

शिक्षा तथा साहित्य– (1) तमिल व संस्कृत दोनों भाषाओं का की उन्नति।

विहार मठ, मंदिर, धरिकोय — (शिक्षा केन्द्र)

–भारवि किरातार्जुनीय– दण्डी दश कुमार चरित्र।

– दण्डिन कविता की रचना– सीधी रामायण, उल्ली महाभारत मत्त विकास ब्रहसन महेन्द्र तमिल कुरल तर्किक भाषा का मानक। मंदिर धार्मिक जीवन का केन्द्र बिन्दु– शुद्र व अछूत मंदिर प्रवेश वर्जित देवदासी भारत नारयक की उत्पत्ति।

कला

1. महेन्द्र शैली मण्डप(हाल)
2. मामल्ल शैली– मण्डप तथा रथ

मण्डप– धर्मराज मण्डप, आदि ब्याह मण्डप, महिव मंदिनी मण्डप, पंच पांडव मण्डप, रामानुज मण्डप।

रथ– (सप्त पैगोड़ा) द्वीप दीरथ, गणेशस्य, अर्जुन ाम, श्री राम, धर्म राजस्व

3. राज सिंह शैली– संरचनात्मक मंदिर– शोर मंदिर, कैलाश नाथ
4. नंदिवर्मन– छोटे मंदिरो का समान।

————————————————

सामाजिक परिवर्तन (गुप्तोत्तर काल)

गुप्तोत्तर काल एवं प्राक मुस्लिम युग में महत्वपूर्ण सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। इस काल में एक महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन जिसने सामाजिक ढांचे के सभी पहलूओं को प्रभावित किया। भूमिान तथा उससे उत्पन्न सामंती व्यवस्था का वितृत रूप से अपनाया जाना था। भूमि के दान और विभाजन के फलस्वरूप एक नवीन शिक्षित वर्ग (कायस्थ) का उदय हुआ। कृषकों के यप में शुद्रों का रूपान्तरण और वैश्यों के स्तर में शुद्र स्तर तक की गिरावट से भी वर्ण व्यवस्था में विशिष्ट परिवर्तन हुआ। यहाँ तक कि बंगाल एवं दक्षिण भारत में स्थापित नवीन ब्राहमणीय व्यवस्था में मुख्य रूप से केवल ब्राह्मणों एव शुद्रों का प्रावधान किया गया था।

इस युग का सर्वाधिक विस्मयकारी परिवर्तन जातियों का प्रगुणन था।

(1) परम्परागत वर्णव्यवस्था– यथावत–

ब्राह्मणों की वर्रेण्य स्थिति–(साहित्य व विदेशी वृतान्तों से) ह्वेन सांग ने लिखा है कि अनेक वर्ता और जातियों में ब्राह्मण ने लिखा है कि ब्राह्मण सबसे अधिक पवित्र है और उन्हें सबसे अधिक सम्मान मिलता हे। यही विचार अलमसूदी तथा अलवरूनी ने भी प्रगट किये है।

ब्राह्मणों को क्षत्रिय आचार्य तथा उपाध्याय कहा गया है।

अपाद्ध धर्म– मेघातिथि के अनुसार– विदेशी आक्रमणों से यदि खतरा होतो और सामाजिक दुर्व्यवस्था का भय उत्पन्न हो जाये तो ब्राह्मण शस्त्र ग्रहण कर सकता है।
(पराशर) ने भी– ब्राह्मण के लिए कृषि एक सामान्य व्यवसाय बतलाया है। बशर्ते कि वह स्वयं खेती न करे। ये शद्वोद्वारा कृषि करवाते थे। इस काल की स्मृतियों ने आपात काल में व्यापार करने की भी अनुमति दिया है।

(2) राजपूतों की उत्पत्ति– इन्होंने प्राचीन क्षत्रियें का स्थान लिया। यह युद्ध पिय जाति थी। इनके अधीन अनेक ाजवंश स्थापित हुए तथा इनके अधीन अनेक सामंत थे। 12 वीं सदी तक राजपूतों की 36 जातियां प्रसिद्ध हो गयी थी। चौहान, चालुक्य पर परमार पदैल परमार प्रतिहार गुहिल, मेव आदि, ये सभी क्षत्रिय कहलाने लगे।

क्षत्रियों के दो वर्ग– अलवरूनी के व्रहाता से पता चलता है कि राजपूत क्षत्रिय ब्राह्मणों के समान समझे जाते थे किन्तु खेतिहर क्षत्रिय और वैश्य बराबर थे और शुद्रों से बहुत ऊंचे थे क्योंकि इन्हें वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था।

(3) वैश्य– कृषि, पशुपालन, व्यापार– (कुशीद वृत्ति) परम्परागति
परिवर्तन– बौद्ध जैन तथा वैश्णव धर्म में प्रतिपादित अहिंसा सिद्धांत कृषि कर्म तथा पशुपालन छोड़कर व्यापार को अपनी आजीविका का साधन बना लिया था। इसके बावजूद अलवरूनी पर यदि विश्वास किया जाय तो वैश्यों और शुद्रों को वेदों के अध्ययन और भ्रमण की अनुमति नहीं थी। ऐसा करने पर उनकी जीभ काट ली जाती थी। अलवरूनी पुनः लिखता है कि– वे नगर तथा गांव में एक साथ रहते थे और कभी–कभी एक ही आवास में रहते थे।

(4) शुद्र– शुद्रों की आर्थिक में पर्याप्त उन्नति के बावजूद उनकी सामाजिक स्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं होता। इस काल की स्मृतियों में सेवा वृत्ति के अतिरिक्त शुद्र के लिए अन्य अनेक व्यवसाय निर्धारित किये गये है। उन्हें कई वस्तुओं में व्यापार करने की भी अनुमति दी गयी थी। जिससे निश्चित रूप से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ होगा।
अति, देवल तथा पराशर ने शुद्र के लिए सेवा के अतिरिक्त कृषि पशुपालन, वाणिज्य तथा शिल्प उपयुक्त व्यवसाय बताये है।

आर्थिक दृष्टि से इस युग की महत्वपूर्ण विशेषता है कृषि कार्य का आमतौर पर शुद्रों का व्यवसाय होना। स्मृतियों से ज्ञात होता है कि कृषकों का एक अलग वर्ग था जिसे कुटुम्बी तथा कीटाश कहा जाता था।

शुद्रों को यद्यपि सरोवर कूप आहार गृह आदि बनवाने की अनुमति प्राप्त थी और वे पुण्य कमा सकते थे किन्तु इस तथ्य के बावजूद मेघातिथि ने उन्हें चौथे आश्रम के फल अर्थात मोक्ष अधिकार से इस आधार पर वांचित कर दिया गया कि– वे मात्र गृहस्थ के रूप में काम कर सकते थे और द्विजों की सेवा करके तथा संतानोत्पत्ति द्वारा ही पुण्य कमा सकते थे। वेदाध्ययन तथा वैदिक यज्ञ क`सम्बंध में शुद्रों पर प्रतिबंध अब भी लगे थे। उन्हें पुराण भ्रषण की मात्र अनुमति थी।
कायस्थ– याज्ञ वल्मरू स्मृति (सर्व प्रथम उल्लेख)– इसमें कहा गया है कि– राजा को चाहिए कि शोषित प्रजा की विशेष कर कायस्थों से रक्षा करे।
"भक्ष्यमाणा प्रजाः रक्सा कायस्थे च विशेषतः"
अधिक सभा बना यही है कि– गयक और लेखक के रूप में कायस्थ भूमि व राजस्व सम्बंधी दस्तावेज तथा हिसाब, किताब रखते थे और पद का अनुचित लाभ उठाकर प्रजा पर अत्याचार करते थे।
कायस्थों में विभिन्न वणों के लोग थे, कायस्थों की उत्पत्ति के बारे में ब्राह्मणों का मत द्वियर्थ क रहा है। कुछ ने कायस्थों की उत्पत्ति द्विज जाति से बतायी है और कुछ ने शुद्रों से बताया है। 10वीं, 12वीं शताब्दी के बीच विभिन्न स्थानों के आधार पर कायस्थों की उपजातियों भी बन गयी। जैसे– गौड़ कायस्थ, वल्लभीय कायस्थ, माथुर, श्री वास्तव, निगम आदि।

क्षेमेन्द्र के अनुसार कायस्थों के उदय से ब्राह्मणों के अधिकारों पर आघात पहुंचा। राम शरण शर्मा के मतानुसार– इससे ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त हो गया। कायस्थों से अप्रसन्न होने का दूसरा कारण था, भूमि सम्बंधी दस्तावेजों में कायस्थों द्वारा हेराफेरी। इससे ब्राह्मण जिन्हें भूमि दान में मिलती थी काफी परेशान से थे। इसीलिए ब्राह्मणों ने कायस्थों को शोषण करनी के रूप में उल्लिखित किया है।

विवाह तथा खान पान– तथा कथित क्षत्रियों में बाह्य तथा अदिवासी जातियों के समावेश के कारण ब्राहमणों ने रक्तशुक्ति की भावना से प्रेरित होकर विवाह एवं खान–पान के नियम अत्यधिक कठोर बना दिये।

औशनस एवं व्यास स्मृतियों में बताया गया कि– अनुलोम अंतर्जातीय विवाह से उत्पन्न संतान की जाति– माता पर आधारित होगी।

अश्पृश्यता– भावना तीव्र– पहले मात्र चांउाल ही अश्पृश्य थे– अब सात जातियां की अश्पृश्य मानी जाने लगी। जक धर्मकार, नट, वरूड़, कैवर्त्त, धीवर भेद तथा भिल्ल।

इनके स्पर्श दोष निवारण के लिए, शुद्धि क्रियाये करनी पड़ती थी। गाय दुहते समय, देव यात्रा, विवाह, यज्ञोत्सव के समय, सेना निवेश, बाध्य आक्रमण के समय, अश्पृश्यता का दोष नहीं लगता था।

स्त्रियों की दशा– बाल विवाह, विधवा विवाह निषिद्व, सती प्रथा, प्रदा प्रथा आदि।

दास प्रथा– ये केवल राजा सामंत और ग्रहस्थ के यहाँ ही नही बल्कि मठों मंदिरों में भी रहते थे। दासों का व्यापार व्यापक पैमाने होता था। दास दासियों को दान देने की प्रथा। इस काल के नियामकों ने दासों के जान माल के अधिकारों की रक्षा के लिए कोई नियम नहीं दिये है, जिससे स्पष्ट होता है कि– उनकी दशा पूर्व काल की अपेक्षा गिरी हुई थी। दासों को नाना प्रकार के दंड तथा यातनाये दी जाती थी।

————————————————————

20

त्रिकोणीय संघर्ष

(1) पहल– वत्स राज ने किया– इन्द्रापयुघ को अधीन किया। वत्सराज व धर्मपाल– के मध्य गंगा यम1ना के दो आब में युद्ध।

प्रमाण– गोविन्द तृतीय के साधन पर लेखे के अनुसार–

मदान्ध वत्सराज ने गौड़ राज की ाज लक्ष्मी को आसानी से हस्तगत कर लिया तथा उसके दो राजछत्रों को छीन लिया।

राष्ट्रकूट ध्रुव का आक्रमण– वत्सराज पर

(2) राधन पुरन्ते के अनुसार– उसने वत्सराज के यष के साथ ही उन दोनों राज छत्रों को भी छीन लिया जिसे उसने गौड़ नरेश से छीना था।

धर्मपाल पर आक्रमण–

(3) संजन लेख के अनुसार– उसने गंगा, यमुना के बीच भागते हुए गौड़ राज की राज लक्ष्मी के लीलार विन्दों और श्वेत छत्रों को छीन लिया। धर्मपाल ने कन्नौज पर आक्रमण किया तथा इन्द्रा युद्ध को पदच्यूत कर कन्नौज का राजा बनाया।

(4) भागल पुर लेख के अनुसार– धर्मपाल ने इन्द्रा युद्ध और दूसरे शत्रुओं को परास्त कर कन्नौज नगर पर अधिकार कर लिया। किन्तु उसे चक्रायुघ्ज्ञ को उसी प्रकार वापस दे दिया, जिस प्रकार बलि ने कून्द आदि शत्रुओं को जीत कर भी वामन रूपधारी विष्णु को तीनों लोक प्रदान किया था।

नागभट्ट द्वितीय को धर्मपाल चक्रायुद्ध पर आक्रमण ग्वालियर लेख के अनुसार– बंग नरेश अपने गजो अश्वों तथा रथों के साथ घने बादलों के अहंकार की भांति आगे बढ़कर उपस्थिति हुआ किन्तु त्रिलोको को प्रसन्न करने वाले नाग भट्ट ने उदीयमान सूर्य की भ्रांति उस अंधकार को काट डाला।

गोविन्द तृतीय का आक्रमण

संजन लेख के अनुसार'– गोविन्द द्वितीय नागभट्ट को पराजित किया तथा धर्मपाल व चक्रयुघ स्वतः उसकी अधीनता स्वीकार कर लिया।

(3) देवपाल– (पाल) रामभद (प्रतिहार निर्बल)

(4) मिहिर भोज प्रथम (प्रतिहार)– शुरू में यह पालों तथा कृष्ण द्वितीय से पराजित हुआ लेकिन शीर्घ ही दोनों को पराजित कर कन्नौज को राजधानी बनाया।

(5) महेन्द्र पाल (प्रतिहार)– सर्वाधिक योग्य व शक्तिशाली– देवपाल की मृत्यु के बाद पाल उत्तर भारत से मोक्षक हो गये– राष्ट्रकूट अपने घरेलू राजनीति में उलक्ष गये।

गहड़वाल– जयचंद का शासना प्रतिहारों के बाद।

————————————

मौर्य युग

1. माप तौल– मापक, कर्ष, द्रोण, आटक, प्रस्त, कुटुम्ब।
2. लक्षणध्यक्ष – यह मुद्रा विभग प्रमुख होता था।
3. सिक्के – सोने, चांदी तथा तांबे के बनते थे, पण– चांदी व तांबा।
4. आहत – (चांदी) छठी शताब्दी से 2 सदी ईसा पूर्व।
5. सौवर्णिक – सिक्का विभाग का प्रमुख।
6. मोर्य युगीन सिक्कों पर पहाड़ी, अर्द्धचन्द्र व मयूर की आकृति उत्कीर्ण होती थी।
7. मुजरिस केरल – पिन्डूकै (पांडिचेरी)
8. वृंज भूमिका – अशोक ने पशुओं की देखभाल करने के लिए व्रज भूमिक नामक अधिकारी की नियुक्ति किया थ।
9. केशर–कश्मीर, चावल–मगध, गन्ना– बंगाल, रेश्मी वस्त्र– काशी, सूती वस्त्र– मथुरा, ऊनी वस्त्र– गंधार, बौद्ध युग।
10. अर्थशास्त्र पर भट्ट स्वामी ने टीका लिखा है।
11. वैदिक काल में बलि का भार वैश्यों व शुद्रों को उठाना पड़ता था। शुद्र चूंकि शिल्प उधोगों में भी लगे थे। इसीलिए उनवसे भी बलि लिया जाता था। भागदुथ – बलि का वसूल कर्ता (उत्तर वैदिक काल)
12. गुप्त काल में भूराज्व भाग व उद्रण कहलाता था।

पूर्व मध्य काल – कराधान

उद्वग – यह वह कर था जो कृषकों से लिया जाता था।

उपनिकर – यह उनसे लिया जाता था जिन्हें असथाई भूमि दी जाती थी। यह अतिरिक्त कर था।

तुरूष्क दण्ड – तुर्क आक्रमण कारियों से मुकाबला करने के लिए ये कर वसूला जाता था उसे तुरूष्क दण्उ कहा जाता था।

13. उत्तरवैदिक काल के साहित्य में कपारा का उल्लेख नहीं मिलता, जबकि उन का उल्लेख बार–बार मिलता है।
14. कण्टक शोधक न्यायालय– व्यवसाय व उधोगों पर नियंत्रण भी रखते थे।

1. निष्क, कृष्णल शतमान, पाद, सुवर्ण– (मुद्रा) उत्तर वैदिक काल।
2. स्मृतिकाल – 200 B.C से 400 A.D तक
3. सूत्रकाल – 500 B.C से 300 B.C तक

निष्क व हिरण पिंड माना – **ऋग्वेद**

———————————————

गुप्त युग– वाणिज्य व व्यवसाय

1. चमड़ा उद्योग, हाथी दांत उद्योग, सूती, रेशमी, उनी वस्त्र उद्योग पर्याप्त विकसित थे। जवाहरात उद्योग।
2. इस युग में खनन उद्योग के बार में बहुत कम जानकारी मिलती हे जगता है यह उद्योग विकसित नहीं था तथा धातुए विदेशों से मंगायी जाती थी।
3. इलाहाबाद के निकट भीटा से हाथी दांत की अनेक गुप्त मुद्रायें मिली हे।
4. कामसूत्र, अमरकोष, वृहत्संहिता, हर्ष चरित्र तथा कालीदास की कृतियों से इस काल के वाणिज्य व उद्योग का ज्ञान होता है।
5. रघुवंश में– अतिवाटीका महीन वस्त्रों का उल्लेख, अभिज्ञान भांडुतंत्रम, चीमांशुक, पीली रेशम वस्त्र।
6. तक्कौल बंदरवाह– मलाया, हील बंदरगाह– फरातनदीपर (ईराक, ईरान)
7. कासमास– लेखक/छठी शताब्दी
8. कलिंगम– तमिल साहित्य में वस्त्र के लिए प्रयुक्त शब्द
9. बनियाना– यह शब्द भारतीय व्यापारियों के लिए प्रयोग किया गया है।
10. धर्मपाल (पालवंश) ने जहाजी घोड़े की उन्नति के लिए एक नौ–विमान की स्थापना किया था।

गुप्तोत्तर काल

1. इस युग में भारत का व्यापार कोरिया व जापान से भी होने लगा था।–7वीं सदी में

1. यात्री–
2. भारत जैसा कपड़ कहीं नहीं मिलता। वे इतने बारीक होते थे कि पूरा कपड़ा एक अंगूठी में समा जाता था। – BY सुलेमान
3. राजेन्द्र प्रथम (चोल) को चोल अभिलेखों में 1200 द्वीपों का स्वामी कहा गया है।
4. बंदरगाह– देवल– सिंघ, पकर– कोरोमडल तट

1– गजापर– इस काल में दक्षिण में मिट्टी के बर्तनों का उद्योग काफी विकसित था जिसे विदेशी यात्रियों में गजापर नाम दिया है।

श्रेणी व्यवस्था

1. महाभारत, रामायण, बौद्ध जातक, अर्थशास्त्र, मनुस्मृति, याज्ञवल्य की आदि ग्रंथों में श्रेणी संगठनों का वर्णन मिलता है।
2. भांडागाटिक– श्रेणी संगठनों के नेताओं को राज दरबार में भांडागरिक कहा जाता है।
3. समुदाय– प्रत्तेक समूह अथवा श्रेणी के सामान्य सदस्यों की एक सभा होती थी जिसकों समुदाय कहा जाता था।
4. सम्व्यावहारिक– संगठित व्यापारियों को।
5. वैशाली की खुदाई से 274 मिट्टी की मुहरे मिली है जो विभिन्न श्रेणी संगठनों की है। – गुप्तकाल
6. दक्षिणी भारत–

नाना देशी– यह दक्षिणी भारत का श्रेणी संगठन था जो विदेशों में व्यापार करता था।

माणिग्रामम्– यह भी दक्षिणी भारत का श्रेणी संगठन था जो स्वदेशी व्यापार में संलहन था।

7. सहजाति निगमस– मीटा से प्राप्त मुहर पर अंकित है। – 400 B.C
8. नारदस्मृति में श्रेणी को चार प्रमुख न्यायालयों में दूसरा स्थान प्राप्त था। चार न्यायालय– कुल, श्रेणी, गण और राजा।
9. दामोदर तामपत्र में (433–430B.C) श्रेणियों द्वारा किये गये न्यायियक कार्यो का उल्लेख किया गया है।
10. सैनिक कार्य श्रेणी– मंदसौर अभिलेख।

————————————————————

विनिमय या सिक्का एवं मुद्रा पद्धति

1. सिन्धु सभ्यता – Barter System गाय
2- वैदिक युग – Barter System
3. हिरण्य पिड व निबरू व मना – **ऋग्वेद**
4. कृष्ण वाद, शतमान, निष्क, सुर्वा– उत्तर वैदिक काल

उपरोक्त सभी सिक्के नहीं थे।

नोट– वैदिक साहित्य में इस तरह का कोई उल्लेख नहीं मिलता कि किसी राजा या श्रेणी ने निष्क को प्रचलित करवाया एवं राजा द्वारा उनकी कीमत और मात्रा की गारण्टी के लिए चिन्ह लगवाया गया हो। निष्क व हिरण्य पिंड का प्रयोग राजा के दान के रूप में ही हुआ है। साधारण विनिमय में गाय का ही प्रयोग किया गया है।

5. 6वी शताब्दी के बाद– आहत सिक्के– 6वीं सदी 300 B.C इसे सर्वप्रथम वणिकों ने आरम्भ किया था। चइनका वजन 116 माशा (56 ग्रेन) था।

क. मौर्यो के पहले के आहत सिक्कों पर चिन्ह– सूर्य, षठकोण, पहाड़ी पर बैल, पहाड़ी पर खरगोश, तालाब में मछली आदि। सम्भव है कि इन सिक्कों को हर्षक वंशी तथा नंदों ने चलवाया हो।

ख. मौर्य युग– अर्द्धचन्द्र, मयूर, पहाड़ी, बैल, हाथी, पेड़।

6. भारत में युनानी सिक्के–

क. डिमिट्रियस– पहला यूनानी सुल्तान था, जिसने यूनानी मुद्रा में कुछ भारतीय तत्वों को ग्रहण किया था।

ख. शको, कुषाणों व पल्लवों ने भारत के आहत सिक्कों की नकल न कर के। यूनानी सिक्के के आधार पर अपने सिक्कों को उत्कीर्ण करवाया था।

ग. पोटीन– (तांबा+चांदी) सातवाहन।

7. गुप्त युग

क. गुप्तों ने अपने सिक्कों के प्रचलन में कुषाणों का अनुकरण किया। दूसरे इन पर यूनानी प्रभाव भी कुछ परिलाच्छित होता है।

ख. प्रारम्भ में गुप्तोां की मुद्राओं पर यूनानी तथा कुषाण प्रभाव ज्यादा परिलक्षित होता है लेकिन धीरे–धीरे स्कन्द गुप्त के काल से उनका प्रभाव कम होने लगा।

समुद्रगुप्त– गरूणध्वज शैली, घर्नुपर शैली, परशु शैली, वीणा शैली, व्याघ्र शैली–
चन्द्रगुप्त द्वितीय– अर्जुन शैली, पर्यक शैली, व्याघ्र निहंता शैली अश्वमेघ शैली आदि।
कुमार गुप्त– अश्वमेघ शैली, गैंडा शैली, आदि।
स्कन्द गुप्त– राज लक्ष्मी शैली।

वयाना निधि से कुमार गुप्त की 623 मुद्रायें मिली है। कालीघाट से भी गुप्तों की मुद्रायें मिली है।

निष्कर्ष– आरम्भ में गायें– तत्पश्चात, वस्तुए, विनिमय का माध्यम बनी। कालान्तर में सिक्कों का प्रचलन हुआ।

प्राचीन भारत में मापतौल

1. वाजसनेयी संहिता में सर्वप्रथम– तुला(balance) शब्द मिलता है।
2. पाणिनी ने आढ़क, आचि, पाल, द्रोण, प्रस्य जैसे शब्दों का प्रयोग तौजने व मापने के लिए किया है।
3. पटबाध्यक्ष– तौंक माप अधिकारी– मौर्य युग
4. हस्त पुराण– घेलवा– अर्थात तौलने के बाद अतिरिक्त देने के प्रथा। मौर्य युग
5. हल्वाह व निबर्तन– भूमि नापने को– गुप्तोत्तर काल पर्व– भूमि को दण्ड नापने की विधि को 1 वर्ष कहते है।

————————————————————

धर्म तथा धार्मिक विश्वास व दर्शन

1– ऋग्वेद

1. प्राकृतिक शक्तियों का दैवीकरण–
2. मानवीकरण– प्राकृतिक शक्तियों के प्रतिनिधि के रूप में मानवीकारण तीन भाग–

- पृथ्वी के देवता– पृथ्वी, अग्नि, सोम, वृहस्पति, नदियों के देवता।
- अंतरिक्ष देवता– इन्द्र, रूद्र, वायु, पर्यन्यन, आय।
- आकाश– घौस, वरूण, मित्र, सुर्य, सविता, षुदान, विष्णु, आदित्य, उषा

3. ऋत व्यवस्था – वरूण
4. देवाति देव की खोज– सर्वदेववाद भ्मदवजीपेउ मैक्समूलर द्यावा पृथ्वी, मित्र वरूण, उषारात्रि, वरूण, देवातिदेव, वाद में इन्द्र देवातिदेव बने।
5. एकेश्वरवाद या परतत्व की खोज– हिरण्य, गर्भ, प्रजापति विश्व कर्मा। "सत एकं विप्रा बहुधावदंति"
6. पूजाविधान– स्तुति व यज्ञ– प्रवृन्ति मार्यी, मंदिर नहीं।
7. नैतिकता– है देव यदि हमने किसी पड़ोसी सदृश्य के प्रति पाप किया हो अथवा किसी मित्र व सहयोगी का अहित किया हो तो इस पाप से मुझे मुक्त कर दो। स्वर्ग नरक का उल्लेख, मोक्ष का उल्लेख।
8. ऋग्वेद में प्रायः भूत प्रेत, जादू टोना, आदि का भी उल्लेख मिलता हैं

इन्द्र सबसे शक्तिशाली देवता – 250 सुक्त
अग्नि सबसे शक्तिशाली देवता – 200 सूक्त

———————————————

उत्तर वैदिक काल धर्म

1. पवृन्ति मार्गी– भौतिकवादी– इस युग में एक तरफ ब्राह्मणों द्वारा प्रतिपादित एवं पोषित यज्ञ अनुष्ठान एवं कर्म की श्रेय व्यवस्था थी तो दूसरी ओर इसके विरूद्ध उढादि गयी। उपनिषदों की आवाज थी।
2. यद्यपि कुछ यज्ञ ऋग्वैदिक काल में भी थे लेकिन सही रूप में यज्ञों का विकास इसी युग में हुआ। अश्वमेघ, वाजपेय व राज सूप
3. उपनिषद– "यज्ञ आदि कमजोर नौका के समान उनसे भव सागर पार नहीं किया जा सकता।" ज्ञान मार्ग का प्रतिपादन– ब्रहम व आत्मा की एकता।
4. लोहे से– कृषि – में बैल पशुबलि यज्ञों का विरोध।
5. स्तुतिपाठ के स्थान पर– यज्ञों का महव्वपूर्ण स्थान। यज्ञ इस संस्कृति का मूल था, जिसमें असंख्य पशुबलि दी जाती थी।

सार्वजनिक यज्ञ– राजा अपनी प्रजा के साथ करता था।

निजी यज्ञ– प्रत्तेक व्यक्ति अलग–अलग करता था।

होता उद्रगाता– यज्ञमान (यज्ञ करने वाला)

यज्ञों में ब्राह्मणों का विशेष स्थान – यज्ञ कराने का अधिकार

यज्ञों में गायों के साथ–साथ, सोना, कपड़ा आदि पुरोहितों को दक्षिणा में दिया जाता था।

शतपथ ब्राह्मण– अश्व मेघ यज्ञ में पुरोहित को उत्तर दक्षिण, पूरब, पश्चिम चारों दिशायें देनी है।

6. पुोहितों व याों व कर्मकांडों के विरूद्ध– प्रबल प्रतिक्रिया। ज्ञान को विशेष महत्व – उपनिषद
7. देवों में– प्रजापति को सर्वोच्च स्थान। इन्द्र, अग्नि, वरूण का स्थान–प्रजापति, विष्णु, रूद्र शिव ने हि लिया। मूर्ति पूजा की शुरूवात।
8. ज्ञान मार्ग से लोग प्रभावित होकर– कायाम्लेष व संयास तथा मोक्ष प्राप्ति की ओर उन्मुख हुए। इसी काल में– चार आश्रमों की विधिवत स्थापना हुई।

वैदिक काल

समाज व्यवस्था

1. परिवार– पितृसत्तात्मक– रृजास्व अंधा, शुनः शेष बेचा गया। संयुक्त परिवार– विवाह मुक्त– नवविवाहिता वधु।
2. वर्ण व्यवस्था– वर्ण शब्द– रंग के अर्थ में या व्यवसाय के अर्थ में–

जब आर्य आये– योद्धा, पुरोहित, सर्वसाधारण आार्यो का अनार्यो से युद्ध– बोद्धा, छत्र, विश में कवि हूँ, पिता वैध, माता अनाज पीसने वाली।

पुरूष सुक्त– ब्राह्मणोस्य मुखमासीद, वाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यर्द्धेष्यः पदभ्याम शुद्रों अजायत।

शुद्र– R.S शर्मा का विचार

3. दास प्रथा– दास व दस्यु– अब्रहमन, अयज्जवन, आसः मृर्घवाचः।
4. विवाह– एक पत्नीत्व विवाह, बाल विवाह नहीं, विधवा विवाह नहीं, अंतर्जाजीव विवाह, नियोग प्रथा। पुत्र की कामना– हे इन्द्रदेव।
5. सती प्रथा नहीं– स्त्री लेटती थी।
6. स्त्री दशा– जायेदात में – (पत्नी ही गृह है) ऋग्वेद लोपा मुद्रा विश्वातारा घोष।
7. शान–पान– सोम, सुर्य, नीवी, वासस, अधिवासस, पासा, ष्थदौरू, घुड़ दौड़, संगीत, सप्त स्वर–

उत्तर वैदिक काल

संयुक्त परिवार पितृसत्तात्मक– वर्ण व्यवस्था पर आधारित।
चारों वर्णो के कर्त्तव्य व कर्मो का निश्चय–
चारों की अंयेष्टि अलग–अलग–एहि, आगाहि, आद्रव, आघाव, शत पंक्ष
अश्वृश्यता का उदय नहीं–
मौत्मय की संहिता– पासा सुर्य
पुत्री सभी दुखों का स्त्रोत– एतरेय ब्राह्मण
स्त्री अर्वगिनी– शतपथ ब्राह्मण
गार्गी यज्ञवल्म्य संवाद– वृहदारण्यक उपनिषद
राजनीति व सम्पति का अधिकार नहीं– स्त्री
गोत्र प्रथा की स्थापना– आश्रम व्यवस्था– तीन –संयास नहीं।

———————————————————

अर्थ व्यवस्था

1. पशुपालन मुख्य– गायणि, गयिष्टि(गाय)– युद्ध का पर्याय, घोड़ा का महत्वपूर्ण स्थान।
2. कृषि– 6,8,12 बैल हल में जोते जाते थे।

सिंचाई– नहर व चक्र से–

ऋग्वेद में एकही प्रकार का अनाज– 'घव'

चावल से अपरिचित– भूमि गांव की सांक्षी सम्पति।

3. वाणिज्य व व्यवसाय– रथकार तक्षा (बढ़ई), कर्माट, स्वर्णकार, चर्मकार, तंतुबाय, कुम्म्कार।
4. व्यापार– त्वउपसस जेंचंत– "समाज के भूपतियों में से ही व्यापारी वर्ग का उदय हुआ, क्योंकि उनके पास अवकाश व पूंजी दोनों थी– अवकाश इसलिए कि वे कृषि के लिए भ्रमिक रखते थे।"

विदेशी व्यापार– भृगु की समुद्र यात्रा का वर्णन

अश्विनी कुमार'– रक्षार्थ– 100 पतवारों वाली नौका भेजा।

विनियम प्रणाली –निष्क–

(1) कृषि उत्तर वैदिक काल

जीवन में स्थायित्व– कृषि को प्रथम महत्व– लोहे का बोज च्ण्ळॅ व छण्ठण्च्ॅ से – स्थायी जीवन का संकेत।

शतपथ ब्राह्मण– कृष्ज्ञि का चार विधि– जुताई, बुआइ, कटाई, मढाइ,

काठक संहिता– 24 बैल वाला हल, – जनक द्वारा हल (शतपथ ब्राह्मण)

मुख्य फसल– गेहूँ, चावल। अंतिरंपी खेड़ा– गेहूँ, चावल। हस्तिनापुर– चावल।

(2) पशुपालन–

(3) वाणिज्य व व्यवसाय–' टिन, तांबा, चांदी, सीसा, लोहा, सोना आदि से परिचित।

चार प्रकार के मृद्र भांड–

- काला और लाल
- काला मृद्र भांड
- चित्रित घूसर मृद्र भांड अति विशिष्ट
- लाल मृद्रभांड– सबसे अधिक प्रयोग

(4) **व्यापर–** श्रेणी व्यवस्था– श्रेष्ठि, कुसाद वृत्ति– तैत्तिरीय संहिता।
विनिमय प्रणाली– सिक्का, निष्क, कृष्णल शतमान

(5) **कर व्यवस्था–** वलि, शुल्क, भाग राजा विशमत्ता, जनता का भक्षक– ऐतरेय ब्राह्मण।

———————————————

चन्द्रगुप्त द्वितीय 375–412

रामगुप्त को मारकर– तात्पाद परिगृहीत– पिता द्वारा मनोनीति
उपलब्धि

(1) वैवाहिक सम्बंध
तालगुंड अभिलेख – काकुरथ वर्मा (कदम्ब नरेश)
भोज के श्रृंगर प्रकाश– कालीास दूत बनके गये थे।

(2) दिग्विजय– धरणि वंशः के स्थान पर कृत्सन पृथ्वी जयः
शक विजय– रामगुप्त की पराजय का बदला लेना– देवी चन्द्र गुप्तम, हर्ष चरित, श्रंगार प्रकाश, काव्य मीमांशा

1– साक्ष्य– चन्द्र के तीन अभिलेख–

क. उदयगिरि का शैव गुहालेख – वीरसेन साव, (संधि विग्रहिक)
ख. उदयगिरि का वैष्णव लेख – सनकानील महाराज– (सामंत)
ग. सांची अभिलेख – आम्रकदिव– (सेनापति)

2– शकमुद्राओं के आधार पर चांदी की मुद्राओं का प्रचलन– शंकाजा रूद्र सिंह तृतीय की मुद्राओं का पुर्नाकनं–

3– व्याघ्र शैली के सिक्के फरी करना– कठियावाड विजय के बाद हिंह विक्रम की उपाधि धारण करना।

4– शकारि– भारतीय अनुभूति थी। विक्रमादित्य की उपाधि

मेहरौली अभिलेख के अनुसार

तीन श्लोक– जिसने बंगाल के युद्ध क्षेत्र में मिलकर आते हुए अपने शत्रुओं के एक संघ को पराजित किया जिसने सिन्धु नदी के सात मुखों को पारकर युद्ध में वाल्ही कों को जीता– जिसके प्रताप के सौरभ से दक्षिण का समुद्र तट अब भी सुवसित हो रहा है।
इस आधार पर–

- वाल्हीक विजय
- दक्षिण विजय
- बंगाल विजय
- काश्मीर विजय – P.C. गुप्ता– राजतंगिणी में

(3) अश्व मेघ यज्ञ– वाराणसी के समीप– नगवां– ग्रा प्राप्त पाषाण निर्मित अश्व पर– चंद्रगू– J. रत्नाकर

(4) शासन व्यवस्था–

1. फाहियान – यात्रा के दौरान कभी भी असुरक्षा का सामना नहीं करना पड़ा।
2. कालिदास – उपवनों में मद पीकर।
3. पदाधिकारी – उपरिक, वलधिकृत, भंडागारिक, महादंड पाकर, महाप्रतिहार, विनय स्थिति स्थापक, दण्ड पाथिण।
4. फाहियान – प्रजा सुखी, समृद्धि थी। मकानों की रजिस्ट्री नहीं न न्यायालयों में न्यायाधीशों के पास लोग जाते थे। राजा विभ्रदर शासन करता था।

(5) सांस्कृतिक उपलब्धि– स्वर्ण युग, क्लासिक युग।

1. पाटलिपुत्र व उज्जयिनी– शिक्षा के प्रमुख केन्द्र।
2. नौ विद्वानों की एक मंडली– दरबार में।
3. कालिदास, धन्वन्तरी, अमर सिंह, वराहमिहीर, शंकू।
4. स्वभाव से परस्पर विरोधी स्थानों में रहने वाली लक्ष्मी एवं सरस्वती ने इस परेश में अपना निवास स्थान बना लिया।
5. धार्मिक सहिष्णुता– अं

संधि विग्रहिक – (वीर सेन का) – शैव
सेनापति – (आम्रकादिव) – बौद्ध
मेहरौली अभि– से ज्ञात होता है कि– उसने विष्णु पद नामक पर्वत पर विष्णु ध्वज की सथापना किया था।

6. आर्थिक दशा– भड़ौच का बंदर गाह मिल जाने से– पश्चिमी व्यापार कृषि व उन्नत थे। अमर कोष से कृषि व व्यवसाय पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

– स्वर्ण, रजत, ताम– मुद्राओं का प्रचलन।
कालिदास– रघुवंश पृथ्वी भले ही– सहस्त्रों राजा।

————————————————

अशोक

धम्म– परिभाषा नील शास्त्री का विचार

उत्पत्ति के कारण–

1– राजनैतिक– R. Thapper

1. नवीन वैदिक आंदोलन
2. वणिक समुदाय
3. सामाजिक तनाव
4. कलिंग विजय का प्रभाव।

स्वरूप धम्म क्या है? दूसरे शिलालेख

उत्तर– अपासिनेर वहुकथने, दाया दाने, सचे (सत्य), सोचये (पवित्रता) मांदे(मृदुता) साचवे चः।

दो पक्ष (1) विधायक (2) निषेधात्मक

(1) निषेधात्मक पक्ष– दुर्गुन जो आध्यात्मिक उन्नति में बाधक है। आसिनव कहा है।

प्रचंडता निष्ठुरता क्रोध, घमंड, ईर्ष्या– आत्मपरीक्षण

नवां शिलालेख– स्त्रिया– मांगलिक कर्म– घम्म मंगल

11वां लेख – साधारण दान से धम्मदान वेहतर है।

13वां लेख – धम्म विजय, साधारण विजय से बेहतर है। बिहार व समाज यात्राओं पर प्रतिबंध– धर्म यात्रा।

(2) विधायक पक्ष– क. सहिष्णुता व अहिंसा ख. परोपकारिता व जन कल्याण

सांतवें शिलालेख– मेंने द्विपद (मनुष्य), चतुष्पद (जानवर) तथा पक्षियों और जल चरों के लिए अनेक प्रकार से उदारता तथा अनुग्रह किये।

धम्म का स्वरूप

1. फ्लीट – राज धर्म– मात्र कर्मचारियों के लिए।
2. त्ण्ज्ञण मुखर्जी – सभी धर्मो का सार।
3. त्ण जेंचचमत – धम्म अशोक का निजी अविष्कार था।
4. स्मिथे – अशोक का धर्म किसी एक सम्प्राय से सम्बंधित न था, अपितु सभी भारतीय धर्मो के लिए समाज था।
5. त्ण्ळ भंडारकर – अशोक का धम्म धर्म निर्पेक्ष बौद्ध धर्म के अतिरिक्त कुछ नही था।

अशोक के समय बौद्ध धर्म के दो रूप– 1. भिक्षु बौद्ध धर्म 2. उपासक बौद्ध धर्म
अशोक गृहस्य होने के कारण– उपासक बौद्ध धर्म को अपनाया था क्योंकि अशोक के धम्म और उपासक बौद्ध धर्म्म में सम्यता है।
प्रमाण– 1. दीर्ध निकाय का सिगालोवाद सुत्र 2. विमान वत्थु

सर्वलोक हित मेरा कर्त्तव्य है, सर्वलोकहित से बढ़कर कोई दूसरा कर्म नहीं है, मैं जो कुछ पराक्रम करता हूँ वह इसलिए कि भूतों के ऋण से उगृह हो जाऊ।

–छठा लेख

H.G. वेल्स का विचार– "Sutlines of History"
कॉंस्टे सटाईन व शार्लमैन"

————————————————

फिरोज तुगलक की नीतियाँ

1– मुहम्मद तुगलक की नीतियों का परिणाम–

1. ऋण पंजिकाओं की समाप्ति।
2. रक्तपात व यातनाओं पर निषेध–
3. उत्पादन के अनुसार कर निर्धारण– 24 कष्टदायक करों की समाप्ति, खराज, खुम्स, जजिया, जकात
4. भूमिकर अधिन्यस अथवा अक्ता प्रथा– सैनिकों को भी इसके पूर्व मात्र सैनिक अधिकारियों को ही दिया जाता था।
5. वंशानुगत अधिन्यास या अक्तर–

अफीफ– 1. सैनिक की मृत्यु के बाद पुत्र जमाता को– दास– पत्नी को।
2. वृद्ध सैनिक अपने स्थान पर अपने पुत्र को भेज सकता था।

6. दासों का संग्रह– 180,000 दास, दीवाने वंदगान (दास विभाग) भूमि खंड व नकद वेतन दासों को भी।
7. धार्मिक नीति–

- उलेमा वर्ग के हस्तक्षेप को स्वीकार किया।
- इस्लामी कानूनों के शरीयत के अनुसार शासन।
- धार्मिक असहिष्णुता, धर्मान्धता की नीति– हिन्दु, शिया, व सूफी व महदवियों के प्रति कठोर नीति। फतुहात में दावा करता है– "मैंने अपनी काफिर प्रजा को पैगम्बर का धर्म स्वीकार करने के लिए बाध्य किया और यह घोषणा किय कि जो ऐसा करेगा उसे जजिया से मुक्त कर दिया जायेगा।"
- ब्राह्मणों पर जजिया। ब्राह्मण को फांसी।
- मूर्ति भंजक– जाज नगर के मंदिरों को तुड़वाया।
- खलीफा से दो बार स्वीकृति।

R.C. मजूमदार– "फिरोज इस युग का सबसे महान धर्मान्ध शासक था। वह इस क्षेत्र में सिकन्दर लोदी व औरंगजेब का अग्रसर था।"

8. परोपकारी नीति– रोजगार विभाग, दीवाने खैरात, चिकित्सालय, मुस्लिम कन्याओं को दान।

————————————————

वल्बन

तुर्की साम्राज्य को स्थापित्व प्रदान करने के उपाय–

नासिरूद्दीन महमूद– नायब–ए–मामलिकात
आंतरिक कठिनाईयों (हिन्दु राजाओं का विद्रोह, मंगाल आक्रमण) के कारण सामाजवादी नीति का त्याग– आंतरिक सुरक्षा व गठन का प्रयास।

1. राजत्व का दैवी सिद्धांत।
2. तुर्कान–ए–चिहालगानी की समाप्ति। तुर्की नस्ल का पराभव,
3. सेना का पुर्नगठन– दीवाने आरिज की स्थापना, संख्या में वृद्धि, प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान– निरंतर अभ्यास'– सैनिक अभिमान की योजना गुप्त।
4. दोआब में इक्ताओं का पुर्नग्रहण– वृद्व, अवज्ञाकारी, भष्ट इक्तादारों को हटाया।
5. प्रशासनिक उपाय और शासन संगठन– नाईव के पद की समाप्ति, वजीर के अधिकार में कर्मी
6. गुप्तचार विभाग का गठन– (वरीद)
7. मंगोलों के आक्रमण से रक्षा के लिए उपाय।
8. बंगाल विजय
9. विद्रोहियों का दमन– दोआब, बदायूँ, अमरोहा, करेहर, मेव विद्रोही (दिल्ली)

————————————————

गुप्तोत्तर काल

1. परासर स्मृति– कृषि ब्राह्मण कर सकता था।
2. वैश्यों का मुख्य व्यवसाय– व्यापार था न कि कृषि व पशुपालन। कृषि मुख्य पेशा शुद्रों का था।
3. कीनाश व कुटुम्बी– (खेतिहर शुद्र)
4. शुद्र– मोक्ष से अभी भी वांछित थे, वे सेवा करके ही पुण्य कमा सकते थे।
5. मूर्त धम– समाजिक कार्य– जैसे तालाख, कुए खुदना, वृक्षतम पालन।
6. अंर्तजातीय विवाह पर प्रतिबंध– खान–पान, रहन सहन में घोर कठोरता व प्रतिबंध।
7. अश्पृश्यता का विकास–
8. दास प्रथा में वृद्धि– दासों को दान देने की प्रथा का विकास– इस काल में दासों के जान माल के लिए कोई नियम नहीं था।

वाणिज्य व व्यापार

1. भूमि प्रकार बाधित– जो बोया गया हो, अकृष्ट– जिसमें खेती न की गयी हो, उसन– जहाँ बीज न उगता हो।
2. व्यापार का हाल– आत्मनिर्भर ग्राम व्यवस्था, व्यापार विनिमय के लिए अतिरिक्त उत्पादउन नहीं होता था।
3. महत्तम या माहर– श्रेणी संगठन के मुखिया को कहा जाता था।
4. कार्य चिंतक– श्रेणियों की एक समिति को कहा गया है।
5. इसकाल में उत्तर भारत में श्रेणी व्यवस्था में ह्रास हुआ जबकि दक्षिणा भारत में इनका विकास तीव्र गति से हुआ।
6. सिक्कों का उपयोग अत्यधिक कम– व्यापार विनिमय के माध्यम से

क्रीड़ा – फाहियान

सिक्कों के प्रचलन, उपयोगिता तथा शुद्धता में गिरावट आयी। सोने के सिक्के भ्रम मात्र के थे। चांदी और तांबे के सिक्के ही अधिकतर थे।

1. अमर कोष में पंचरात्र के चर्तुव्यूह का वर्णन मिलता है।
2. मठ– यह शिक्षा भोजन व विश्राम का समुच्चय था।

गुप्त काल– भू व्यवस्था 300–680

1– क्षेत्र – खेती योग्य भूमि।
वास्तु – निवास करने योग्य भूमि।
शिला – जो भूमि जोती नहीं जाती थी।
अप्रहत – बिना जोती जंगली भूमि।

1. वैश्यों की स्थिति– शुद्र स्तर तक आने का मुख्य कार यज्ञ व वेदाध्ययन से विप्त होना था। – गुप्त युग
2. लेकिन गुप्त काल में भी शुद्रों का मुख्य कार्य सेवावृत्ति ही था। इस समय तथा शुद्रों को दान देने व यज्ञ करने का भी अधिकार प्राप्त हो चुका था।
3. अम्बष्ठ – ब्राह्मण पुत्र + वैश्य स्त्री। पारशव– ब्राह्मण पिता+ शुद्रा स्त्री
4. कायस्थ– गुप्तकाल तक मात्र एक वर्ग थे जो बाद में एक जाति के रूप में बदल गये।
5. दास– इस समय दासों की स्थिति काफी दयनीय हो गयी थी उनकों मौर्य युग के विपरीत उत्पादन में कार्यो में न लगाकर मात्र अपवित्र कार्यो में ही लगाया जाता था।

–दास चारों वगों से बनते थे– ब्राह्मण भी कभी ही (भी कभी ही), इसके बावजूद गुप्त काल में दास प्रथा शिथिल पड़ गयी थी। दास प्रथा की शिथिलता का मुख्य कारण जोत के आकार का छोटा होना था– ऐसा भूमि अनुदान के कारण ही हुआ था।

-- R.S Sharma

6. आक्षित हानिक– इसकी स्थिति– दासों जैसी थी।
7. प्रदा प्रथा– अविकसित थी, विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी।
8. धनहरी– पति की सम्पति प्राप्त करने वाली स्त्री।

चोल

1. चोल अभिलेख– संस्कृत, चोल, तमिल, तेलगू, कलड़ में मिलते है।
2. धवलेश्वरम्– चोकल सिक्कों का आकार।
3. कड़गम– सैनिक छावनी।
4. मणिमंगलम अभिलेख– राजाधिराज प्रथम
5. महादण्ड नायक– सेनापति।
6. राजाधिराज द्वितीय ने अश्वमेघ यज्ञ किया था।
7. पाण्डय नरेश कुलेश्वर वर्मन ने– चोरा राज्य पर अधिकार कर लिया।

भारत पर ब्रिटिश के प्रभुत्व के कारक

(1) राजनीतिक कारक– मुगल साम्राज्य के विघटन के बाद

1. मराठों का अधिपत्य– मराठों का नश
2. अफगानों ने किया। ये सभी एक दूसरे के शत्रु थे।

(2) सामंत वादी अर्थ तंत्र– पूंजीवाद का अभाव By A.R देशाई– तर्क पूंजीवाद द्वारा ही लोगों का राजनीतिक आर्थिक व सामाजिक एकीकरण सम्भव हे। क्योंकि पूंजीवाद राष्ट्र उन्नत और परिष्कृत उत्पादन तकनीक पर आधारित होता है। पूंजीवाद देशों में राष्ट्रीय भावना व देशभक्ति का बड़ा महत्व होता है। जबकि सामंती सम्राज्य भौतिक दृष्टि से असम्बद्ध असंयुक्त और राजनीतिक तौर पर विखंडित होता है।

(3) आत्मनिर्भर ग्रामीण समाज– बाहरी दुलिया से असम्बद्ध।

(4) अंधविश्वास रूढ़िवादिता– समाजिक कुरीतियां।

(5) अविकसित तकनीक– कृषि आदि क्षेत्रों में–

(6) याता यात, संचार साधनों की कमी।

(7) राष्ट्रीय भावना का अभाव।

(8) घटिया व परम्वपरागत सैनिक प्रणाली।

भारतीय शक्तियों द्वारा प्रतिरोध

1. मैसूर – आंग्ल मैसूर युद्ध
2. मराठा – आंग्लमराठा युद्ध।
3. बंगाल के नवाब– सिराजुद्दौला, मीर जाफर, मीर कासिम।

———————————————

असफलता के कारण (Causes of Failure)

1– आपसी मतभेद, कलह, वैमनस्य, षडयंत्र, क्रांतिया, भ्रष्टाचार आदि ही भारतीय शक्तियों की असफलता के मुख्य कारक थे।

1. मैसूर के विरूद्ध– अंग्रेजों, निजाम तथा मराठों के त्रिगुट का निर्माण।
2. मराठा संघ में फूट– अलग–अलग अंग्रेजों से संधिया– जैसे– 1782 की भालयार्द की संधि। 1802 की वसई की संधि आदि।
3. बंगाल– अलीवर्दी खां अपने मालिक सरफराज खां के विरूद्ध एक सफल सैनिक क्रांति द्वारा सत्ता अवश्य प्राप्त किया था तथापि उसका सारा शासन काल मराठों से युद्ध में ही व्यतीत हुआ था। फलस्वरूप वह न तो किसी शक्तिशाली सेना का गठन कर सका और न ही आंतरिक व्यवस्था को ही सुदृढ़ कर सका।
4. इसी तरह– मराठों ने अपने जीवन भर अपनी समकालीन शक्तियों से युद्ध में लीन रहे और सभी भारतीय शक्तियों को अपना दुश्मन बना लिये– जैसे– मराठों का निमाज से युद्ध, राजपूतों से युद्ध, अफगानों से युद्ध।

2–कम्पनी को शुरू में मात्र एक व्यापारिक कम्पनी समझना व उसकी शक्ति को कम करके आंकना।

यह भारतीय राजाओं व नवाबों की अनुभवहीनता का प्रतिफल था। यद्यपि उनमे पर्याप्त शक्ति थी और व चाहते थे कम्पनी को शुरू में भारत से निकाल सकते थे।

अतः वे कम्पनी की आक्रमक व विस्तारवादी अपनिवेश्वादी प्रवृत्ति से सहमत न थे। यद्यपि बंगाल के नवाबों में सिराजुद्दौला ही एक मात्र नवाब था जिसने कुछ क्षण के लिए अंग्रेजों को कलकत्ता से निकाल भगाया था लेकिन वह उनको मात्र व्यापारिक कम्पनी समझकर उनकी शक्ति को एकदम समाप्त करने में अनुभवहीनता का परिचय दिया। जिससे वे उचित अवसर पाकर बंगाल में अपनी शक्ति को पुनः सुदृढ़ कर लिया।

3– सरदारों सेनापतियों व दरबायिों का षडयंत्र व विश्वास घात– मराठा संघ– व माठा सरदारों में गुटबंदी व षडयंत्र। मीर जाफर का सिराजुद्दौला के प्रति विश्वासघात तथा मीरजाफर के प्रति मीर कासिम का विश्वास घात।

4– घटिया सैनिक प्रणाली– ब्रिटेन की नौ सैनिक शक्ति– अंग्रेज पराजित होने पर भी समुद्र में शरण ले लेते थे और अवसर पाकर पुनः आक्रमण करते थे।

5– स्थिर आर्थिक नीति का अभाव– मैसूर को छोड़कर किसी भी भारत राज्य ने एक सुदृढ़ आर्थिक नीति का सूत्रपात नहीं किया।

6– अंग्रेजों की उत्तम कूटनीति– अंग्रेज किसी भी राज्य से युद्ध करने के पूर्व अन्य शक्तियों से गुप्त समझौता करते थे– जिनका भारतीय शक्तियों में घोर अभाव था।

जैसे– मैसूर के विरूद्ध – हैदराबाद व मराठों से संधि

पंजाब के विरूद्ध – अफगानों से संधि बंगाल में–

7– सामाजिक कुरीतियां– अशीक्षा, दरिद्रता आदि।

8– राष्ट्रीय भावना का अभाव–

9– विज्ञान व प्रौधेगिकी के क्षेत्र में पिछड़ा पन।

10– अंग्रेजों के गुप्तचर व्यवस्था।

———————————————————

'' सामान्य ''

1. नवसांहसांक चरित्र– (पदमगुप्त)– मालवा के राजा की जीवनी।
   विक्रमांक देव चरित्र– (विल्हण)– चालुक राजा विक्रमादित्य की जीवनी।
   गोधवध (वाम्पति)– कन्नौज नरेश यशा वर्मन की जीवनी
   मुद्राराक्षस (विशाखदत्त)– मौर्यकालीन राजनीतिक प्रपंच
   गीतगोविन्द (जयदेव)– विष्णु का अवतार राधा के प्रेमी के रूप में कृष्ण वर्णन।
2. दस्तकारी को मेघातिथी – निम्न व्यवसाय माना हैं। इसी प्रकार मनु के भाज्यकारो ने भी यात्रिक कार्य को लघु पाप कहा हैं।
3. भारत के लिए '' अरवीनाम– असहिन्दं''– यूनानी नाम इण्डस तथा फारसी नाम– सिन्धु कहा गया है।
4. हिन्दु देवता गण (शैव वैष्णव) अहिंसा का उपदेश नहीं देते थे। जब कि भक्ति सम्प्रदाय थी अंहिसा पर बल देते थे।
5. कृष्ण का संम्बध तमिल देवता बांसुरी वादक मेयन से किया जाता हैं।
6. कृष्ण और गोपी की उपासना जनन क्षमता बढ़ाने के लिए की जाती थी।
7. तंत्रवाद– शैव धर्म का ही एक अंग था इसका उदय 6 वीं सदी में हुआ था। इसका प्रमुख ग्रंथ तंत्रो हैं।
   तंत्रवाद का तिब्बत से अनिष्ठ सम्बंध था (मात्सत्तामक)
   स्त्री सहित सभी वर्ण इसके अनुयायी थे।
   तांत्रिक सदस्यो के लिए– 5 मकार आवश्यक थे।
8. अंतेवासिनी– कोटिल्य द्वारा वर्णित 18 जाति।
9. असूर्यपचा– कौटिल्य द्वारा स्त्रियो के लिए प्रयुक्त शब्द।
10. जाति –

क. वैदेहक– वैश्य पुरुष + ब्राहम्न स्त्री।

ख. आयेगव– शुद्र पुरुष + वेश्या स्त्री।

ग. मैत्रेयक– वैदेहक + आयोगव।

11. पुनर्भू – पुर्नविवाहित स्त्री
12. अपराजित पृच्छा (भुवनदेवकृत)– में सामतो की 9 श्रेणियो का उल्लेख मिलता हैं।
13. कुटुम्बी – कृषक दासा को (800–1200 AD)
14. मुर्तधर्म – सामाजिक व धार्मिक कार्य करना।
15. गायदुहतेसमय, देवयात्म, विवाह यज्ञोत्सव, वाहय्आक्रमण, आगलगने तथा सेना निवेश पर– छूआ – छूत में ढील थी।
16. गोरी – 8 वर्ष
    कन्या – 10 वर्ष (800–1200 AD)

1. सात पवित्र नगर– अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, कांची, उज्जायिनी, द्वारिका, काशी
2. पल– यह सोने का सिक्का था।
3. उत्तरापथ मार्ग– तक्ष शिला से मथुरा तक
   दक्षिणापथ मार्ग– महिष्मती से अमरावती तक
4. शतमान व प्रण– ब्राहम्ण काल की मुद्रा हैं।
5. सत्यपन – जो वस्तुएं अगांड भुगतान पर बेची जाती थी।
6. Poteoli – यह रोम का बंदरगाह था।
7. Spotted or black – (गुप्तायुग) उधार लिये गये रुपये को कहते थे।
8. पण यह चांदी का मौर्यकालीन सिक्का हैं।
9. अशोक के स्तम्भ वलुआ पत्थर के काश्मत हैं।
10. सिन्धु सभयता व मैसोपोरामिया के मध्य व्यापार की मुख्य साम्रागी, कपास अथवा सूती वस्त्र था।
11. फादर हेरास– ने सिन्धु लिपि पढ़ने का प्रया स किया।
    आख्या– सिन्धु भाषा तमिल भाषा की आदि रूप है।
12. हड़प्पा आयात
    टिन – अफगानिस्तान / चांदी– अफगानिस्तान वैदर्यमणि नीलम
    तांबा – वलूचिस्तान / चूना तथा जेनाईट पत्थर– तिब्बत
    कीमती पत्थर – द0 भारत
13. मो0 के योगी की मूर्ति के पास बैठे पशु– वाघ, हाथी, गैंडा भैसा, हिरन
14. लोथल से मेसोपोरामिया की एक मुहर मिली हैं।
15. हड़प्पा निवासी अपने मृदभाडों पर ज्यामिती के साथ–साथ मनुष्य चित्र भी बनाते थे।
1. अधिवर्यु – यज्ञ संम्बधी संस्कारो के समय यह शारीरिक कर्म करवाता था।
2. मंद सौर अभिलेख– रेशम(तंतुकार) पुनकर श्रेणी यह नर्वदा के लाट नामक स्थान पर निवास करती थी बाद में मंदसौर में जाकर बस गयी।
3. 8 प्रकार के गोत्र– कश्यप, वशिष्ठ, भृगु, गौतम, भारद्वाज, अत्रि, विश्वामित्र, अगस्त्य
   अगस्त्य को छोड़कर शेष सात मौलिक ऋषि माने जाते हैं।

1. **चन्द्रायण पश्चाताप–** जो व्यक्ति सगोत्रीय स्त्री से शादी करता था उसे यह पश्चाताप करना पड़ता था। एक माह का कठोर व्रत।
2. प्रथम तीन संस्कार जन्म लेने के पहले ही किया जाता था।
   गर्भाधान– पुंसवन– (पुत्रप्राप्ति)सीमान्तोनपन गर्भ रक्षा के लिए
3. यज्ञोपवीत– दाहिने स्कन्ध से वायी भुजा के नीचे।
4. वेदांग– शिक्षा, कल्प, ज्योतिष छंद व्याकरण, निरुक्त
5. धुव्रतारा– विश्वास का प्रतीक
6. पंचमहायज्ञ– व्रहमयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ
7. दाह संस्कार के 10 वे दिन बाद– मृतक के लिए तर्पण किया जाता था। पिन्ड दान भी किया जाता था।
8. सती प्रथा का प्राचीनतम उल्लेख सिकन्दर के यूनानी विवरणो में मिलता हैं।
9. ' दशावतार '
   मत्स्य, कश्यप(कर्मावतार), वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम कृष्ण, बुद्ध, अंतिम कल्कि
10. सप्तऋषि– मारीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, कृतु, एवं वशिपढ़

11. मार – बौद्धो का काम देवता।
12. विष्णु का वाहन – गरुण
    शिव का वाहन – नंदी
    गणेश का वाहन – मुषक
    सरस्वती का निवास – ब्रहमा
    विष्णु का निवास – बैकुण्ठ
    शिव का निवास – कैलाश पर्वत
13. कर्मवाद सिद्धान्त का पूर्णतय विकास उपनिषदो में हुआ।
14. पंचरातमत के अनुसार – वासुदेव के 6 गुण हैं।
    ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य, तेज
15. अमरकोष में पंचरात्रो के सभी व्यूहो का उल्लेख हैं।
16. शिव की अष्टमूर्ति– रुद्र, भव, सर्व, ईशान, पाशुपति, भीम, उग्र, महादेव
17. लिंगपूजा का स्पष्ट उल्लेख– मत्स्यपुराण
18. एलीफैंटा की त्रिमूर्ति विश्व विख्यात हैं। (गुप्तयुग)
19. पाशुपत सम्प्रदाय– BY लकुलीश का उल्लेख– वायुपुराण व लिंगपुराण
1. यस्क की निरुक्ति – यह ऋग्वेद का सबसे प्राचीनतम भाष्य हैं।
2. 'पुरु + भरत = कुरु –– किषी + तुर्वस = पंचास
3. विशमस अर्थात् राजा उत्पादक वर्गो का भक्षक था। ऐतरेय ब्राहम्ण
4. दुष्टरीत यौशयन की कथा व पांचालनरेश शोण सत्ता वाह द्वीप अश्वमेघ यज्ञ– शतपथ ब्राहम्ण
5. India शब्द यूनानी हैं।
6. अर्थशास्त्र को ई0 सन् के आरम्भकाल में इसका वर्तमान रूप दिया गया।
7. संगम साहित्या का संकलन– 100–400 AD. में हुआ।
8. राजमी की ज्योग्राफी व पेरीप्लस– युनानी भाष में
9. Natural History By pliny – लैटिन भाषा में
10. ऋग्वैदिक आर्यो के हथियार– कांसे के बने होते थे।
11. ऋग्वैद में–
    जन का 275 बार
    विश का 170 बार / उल्लेख हुआ हैं।
    इन्द्र की स्तुति में 250 मंत्र
    अग्नि की स्तुति में 200 मंत्र
12. ऋग्वैदिक काल की मुख्य फसल– जौ
    उत्तर वैदिक काल की मुख्य फसल– गेहूँ व धान
13. उत्तर वैदिक काल के लोग चार प्रकार के बर्तन प्रयोग करते थे।
    1–काले व लाल मृदभांड
    2–काले रंग के मृदभांड
    3–P. G. W. ना
    4–लाल रंग के मृदभांड
14. अश्वमेज्ञ यज्ञ में राजा को चारो दिशाओं को दान में दे देना चाहिए। श0 ब्राहम्ण
15. धातु के बने सिक्के सर्वप्रथम– महात्मा बुद्ध के समय में / अधिकतर चांदी
16. जैन धर्मी राजा–
    लिच्धषि नरेश चेटक, कलिंगराजखखिल,

सम्व्रति (अशोकर्पोत)– रापदूकर गंग, उत्तर चासुक्य

17. जैनधर्म के मुख्य केन्द्र– वलभी, मथुरा, उज्जैन, मैसुर।

(5)

1. कांच पिघलाने की कला 100 A.D. के लगभग भारत आयी।
2. मथुरा की आटा पिसने वाली श्रेणी का उल्लेख–
3. व्यापार घाटे के कारण रोमन सम्राट ने गोलमिर्च व इस्पात की बनी वस्तु (कांट छुरी, चम्मच)के आधार पर प्रतिबंध लगा दिया था।
4. सिंध में सोने की खान थी।
5. कुषाणो ने सबसे अधिक तांबे के सिक्को को ढ़ाला।
6. गुप्तो के काल में भारत पूर्वी रोमन साम्राज्य (विपेचईन) को मुख्यतयः रेशम भेजता था।
7. चांडाल – 500 B. C. के आस पास प्रगट हुए।
8. चोलो ने संस्कृत तथा 'संस्कृत साहित्य' को संरक्षण प्रदान किया।
9. शैवनयनार व वैष्णव असवारो ने भी तमिल भाषा तथा साहित्य कायस्यो की निंदा की गयी हैं।
10. पुर्वमध्यकाल में मुस्लिम (अरबी) यात्रियों का क्रमशः आगमन–

1. इब्न खुर्राब्जा – नवीं शताब्दी
2. अलमसूदी (प्रतिहार) – (915–16) 10वीं शताब्दी के शुरु में
3. अलवरुनी (महमूदगसनवी के साथ) 11वीं शताब्दी में

11. ' कवि व संरक्षणकर्ता नरेश '

1. राजशेखर – प्रतिघर महेन्द्रपाल
2. हेमचन्द्र – चालुम्य जयसिंह सिदृराज
3. पदमगुप्त – मुंज वरमारवंश

12. महात्मावंद्ध –

1. गृहत्याग का सम्बोधि पूर्वयात्रा – क्रमशः
   अनुपिय नामक वाग – टाजगृह – आसार का काम
   दत्तक रामपुत्र – उजवेला – गया।
2. सम्बोधिवाद यात्रा क्रमशः–
   गया– सासाथ (ऋषि पत्रम)– उठपेला – राजगृह– कपिल वस्तु।

37

''बौद्ध विहार व समर्थन कर्त्ता''

1. वेणुवन (राजगृह) – बिम्बिसार
2. जेतवन (श्रावस्ती) – अनाथपिंडल श्रेष्ठि
3. पूर्वारामविहार (श्रावस्ती) – विशाषा नामक श्रेष्ठिकन्या
4. घोषितारामविहार (कौशाम्बी)

1. आम्रपाली – वैशाली
2. अंगुलिमाल डकैत – श्रावस्ती– बुद्ध के जीवन का अंधिकांश समय श्रावस्ती में ही बीता था।
3. बुद्ध ने राजगृह को अपने कार्यक्षेत्र का केन्द्र बनाया था।
4. बुद्ध शव के आढ़ दावेदार राज्य–
   मगध, वैशाली, कपिलवस्तु, अल्लकल्प के जीव, वेलठठदीप के ब्राहम्ण , बाबा के मल्ल, कुशी नारा के मल्ल, रामगांव के कोलिय,
5. पंचस्कन्ध– रुप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान
6. बौद्धो का चरम लक्ष्य– मात्र महायानी ही प्राप्त कर सकता हैं।
7. बौद्ध धर्म के त्रिरत्न– शील, समाधि, प्रज्ञा
8. बौद्ध पिटक –

1. विनयपिटक – संघ नियम, अनुशासन, आदेश
2. सुत्तपिटक – सबसे विशाल– 5 निकाय– बुद्ध द्वारा समय समय पर दिया गया उपदेश।
3. अभिघम्म पित्क – आध्यात्मिक व दार्शनिक सिद्धान्त

'' मध्य कालीन भारत ''

(1) मुहम्मद तुगलक के प्रयोग क्रम से –
देवगिरी निष्क्रमण
प्रतीक मुद्रा का प्रचलन
खुराशान आक्रमण
कराचिल (कागंड़ा) अभियान
दो–आव में करवृद्धि

(2) सीरी अथवा किलोखरी को जला लुद्दीन खिलर्जी ने अपनी नयी राजधानी बनाया था।

(3) सल्तनत कालीन साम्राज्य विभाजन –

साम्राज्य – प्रांत (सूवा) – शिक – परगना – ग्राम

सुल्तान – सुबेदार – शिकदार – आक्कि – स्पायत्र मोखिया मुकदमा।

(4) भारत में तुर्की राज्य – सैनिक व सामंती था।

1. अकबर ने उजवेगो के दमनार्थ कुछ समय के लिए जौनपुर को केन्द्र बनाया था।
2. अकबर की राजस्व व्यवस्था क्रम से–

1. पूर्व प्रचलित पद्धति– (शेरशाह)
2. वार्षिक अनुमानकीय पद्धति – शेरशाह
3. करोडी – (उत्तर भारत)
4. दहसाला पद्धति – 1580 1/3 भाग उपजा
5. जान्ती – इसमें भुगतान नकद होता था।

3. मनसव प्रथा 1577 में लागू की गयी।
4. मुगलकालीन साम्राज्य विभाजन
   साम्राज्य – सूबा– सरकार– परगना– ग्राम
   बादशाह– सूबेदार– फौजदार– स्वायत्त
5. 1586 से 1598 तक (12वर्ष)– अकबर का लाहौर प्रवास मिर्जा हकीम के विद्रोह के कारण
6. अनुवा विभाग में– अरबी, ग्रीक व संस्कुति ग्रंथो का अनुवाद कराया गया।
7. अकबर के राजपूत सरदारो में सबसे ज्यादा और प्रमुख आमेर के रजवाहा थे।
8. फतेहपुर सीकरी – राजधानी रही – 1569–1584 तक
   फतेहपुर सीकरी किसी महान व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब अथवा प्रतिच्घापन हैं। Said By ' फर्ग्युशन '

1. मोतीमस्जिद (आगरा) व ताजमहल – ये पूरी तरह संगमरमर के बने हैं।
2. बादशाह ने आलीशान ईमारतो की योजना बनायी थी। तथा अपने मस्तिष्क एवं हदय की रचना को पत्थर और मिट्टी की पोहशाक पहनाया। '' अबुल फजल'' अकबर के लिए
3. जामी मस्जिद (फतेहपुर सीकरी) – ''पत्थर में रुमानी कथा'' फुर्ग्यसन।
4. ताजमहल यूरोपीय व एशियानी प्रतिभा के सम्मिश्रण की उपज हैं।
5. 'फतवाये– आलमगीरी'– (मुस्लिम धार्मिक कानून) यह अरबी भाषा में हैं।

हूमायूं – चित्रकला

1. मीर सैय्यद अली व ख्वाजा अब्दुल समद, (ईरान के शाहत स्माज्य)
   दास्ताने अमीर हमजा का चित्रण
2. अकबर– इसके काल में यूरोपीय चित्रकला प्रारम्भ हुई (दूरी व नजदीक भेद)
   (दशवत), अब्दुलसमद मीर सैय्यद अली, फर्रूखवेग, खुसरो अली जमशेद, दसावन (गुणसमुद्र) जसवंत, हरिवंश, केसू लाल मुकुन्दी।
   1562 में वैष्णव संगीतज्ञ तानसेन का चित्र बना।
3. जहाँगीर – आगाखाँ, अबूलहसन, मसूर मु0 मुराद विशनदास मनोहर गोवर्द्धन

''सूफी आदि ग्रंथ''

1. चिश्ती – बढितयात्काकी, गंजशकर, निजामुद्रदीन औलिया, नासिरुद्रदीन चिराग, ए दिल्ली– शेखहसैनी गेसूद राज– (दक्षिणी भारत में) शेख सलीम चिश्ती–
2. सुहरावर्दी BY – शेख शहावुदीन सुहरावदी–
   वहाउददीन जकारिया, हमीदुीरदीन नागौरी
3. फिरदौसी– BY शरपुददीन यध्या – विहार
4. कादिरी– अब्दुल
   भारत– शाहनियाम तुल्लाह व दारामुकोह
5. नम्संवदी– If came at last in India
   BY ख्वाजा वहाउद्दीन नम्शवदी
   भारत में ख्वाजा की विस्लाह– शेख अहमद सराविदी, शाहवली उल्लाह मीर आदि।

''भक्ति आंदोलन''

1. सूरदास– 16 वीं सदी में हुए।
2. तुलसिदास– 16 वीं 17वी सदी में हुए।
3. रामानुज– 12वीं सदी में हुए।
4. रामानंद– 14वीं सदी में हुए।
5. कबीर– 15वीं सदी में– 1440–1510
6. नानक– 15वी 16वी सदी– 1469–1538
7. मीराबाई– 16वीं सदी – 1498–1546
   क्रम से –
   रामानुज– रामांनद– कबीर– नानक– मीरा– सूरदास– तुलसीदास।

'' दक्षिणी भारत ''

1. पल्लवो के प्राचीनतम विवरण प्राकृत में मिलने वाले अभिलेख हैं।
2. 'उरार' सभा जो ग्राम की आधार भूति प्रशासनिक ईकाई होती थी, के औपचारिक सम्मेलन को 'एरार' कहा जाता था।
3. 'ब्रहमदेव'– ऐसे ग्रामो को ब्रहमदेव कहा जाता था। जिसमें पूरा ग्राम अथवा ग्राम की भूमि किसी एक ब्रामणो को दान में दिया जाता था। इसमें केवल ब्राहम्ण ही रहते थे।
4. देवदान– इसमें मिश्रित जाति के लोग होते थे। लेकिन इन ग्रामो का सम्पूर्ण राजस्व मंदिर को दानकर दिया जाता था। तथा मंदिर के अधिकारी इसका राजस्व भी वसूलते थे।
5. एरीपत्ती– इसका तात्पर्य– जलाशय की भूमि से था।
   यह व्यक्तिगत लोगो द्वारा दान में दी गयी होती थी जिसका राजस्व ग्रम के जलाशय के रखरखाव के लिए होता था।
6. धटिका– महाविद्यालय जो मंदिरो में होते थे।
7. मढ़– यह विश्राम गृह भोजन केन्द्र तथा शिक्षा केन्द्र का समुच्चय था यह अप्रत्यक्ष रूप से उस मत का प्रचार करता था जिसमें वह सम्बंधित होता था।
8. नयनार– शैव– पुस्तक – विरुमुरई
   अलवार(वैष्णव) – पुस्तक– नलयिर प्रबन्धम
9. अंन्दाल– यह दक्षिणी भारत की महिला भक्त थी जो मीरा की तरह अपने को विष्णु की प्रेमिका मानती थी।
10. भक्ति सम्प्रदायवादी– तमिलभाषा का प्रयोग करते थे।
11. पल्लव काल से अधिक समृद्ध मंदिरो में प्रशिक्षित नर्तकियू रखी जाने लगी।
12. मार्कोचोलो पान्डय राज्य में 1288–93 के मध्य आया था।
13. कन्नड वीरशैव व लिंगामत जैसे धार्मिक आंदोलनो की भाषा थी।
14. रामानुज ने शुद्रो के मंदिर प्रवेश का असफल प्रयास किया।
15. मध्यवर्ती वर्ग – क्षत्रिय, वैश्य

———————————————————

प्राचीन इतिहास – K. C. श्रीवास्तव

1. मत्सयपुराण – सर्वाधिक प्राचीन व सर्वाधिक प्रमाणिक
2. विष्णुपुराण – मौर्यवंश
   मत्स्यपुराण– सातवाहनवंश
   वायुपराण – गुप्तवंश
3. मनुस्मृति – राजनीतिक सामाजिक व धार्मिक स्थित का वोघ होता हैं।
   नारदस्मृति – गुप्तयुग का विशेष वर्णन
4. कालिकापुराण – यह जैन ग्रंथ हैं।
   कल्पसुत्र – (भद्रवाहु)– इससे जैन धर्म का प्रारम्भिक इतिहास ज्ञात होता हैं।
   भगवतीसूत्र– इससे महावीर के जीवन, कृत्यो तथा अन्य समकालिको के साथ उनके सम्बंधो का बड़ा रोचक विवरण मिलता हैं।
   आवारांग सूत्र – इसमें जैन भिक्षुओ के आचार नियमो का वर्णन मिलता हैं।
5. कामदकीय नीतिसार (8–10 पी A.D.) इसमें कामन्दक ने अर्थशास्त्र के कुछ सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया हैं। जिससे राजत्व सिद्धान्त तथा राजा के कर्त्तव्य पर प्रकाश पड़ता हैं।
6. चचनामा –(अरबीभाषा)– सिन्ध पर अरब आक्रमण का वर्णन
7. विदेशीयात्मि।

1. फाध्यान–(375–415) यह मध्यप्रदेश के सामाज व संस्कृति वर्णन करता हैं।
2. सुंगयुन– 510 में आया।
3. हवेन सांग– 629 में आया, 6 वर्षो तक रहा।
   सियूकी– भृमण वृचांत।
4. इत्सिंग– सातवीं शताब्दी के अंत में।
5. अलवरुनी– यह महमूद गजनवी के साथ आया था। यह भारतीयो का निदंक न होकर उनका बौद्धिक समर्थक था। गीता से विशेष प्रभावित था।
   तहकीक–ए–हिन्द– इससे, समाज राजनीति धर्म आदि पर प्रचुर प्रकाश पड़ता हैं। यह बौद्ध धर्म का बहुत कम वर्णन करता हैं।
6. कौशाम्बी की खुदाई में– उदयन का राजप्रसाद एवं घोषिता राम नामक विहार मिला है। उ0 वि0 वि0

1. ताबें के बाद– सर्वप्रथम कांसे का प्रयोग किया गया।
2. दक्षिण भारत में ''पाषाणकाल'' के बाद तत्का लौहकाल आया। जब कि उत्तर में पाषाण काल के बाद ब्राहम्ण कास्य काल आया।
3. ताम्र व लौह काल के साथ ऐतिहासिक काल शुरु होता हैं।

———————————————————————

''सिन्धुसभ्यता ''

1. सुत्कन्जेन्डोर– यह अरब सागर के तट के पास स्थित हैं।
2. विस्तार– वलूचिस्तान, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त पं0 पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, गंगायमुना, दोजीव(मेरठ) जम्मूकश्मीर।,गुजरात, उत्तरी अफगानिस्तान।
3. मार्यलिंग पूजा व मूर्ति पूजा विरोधी थे। जब कि सैन्धव समर्थक थे।
4. सैन्धव द्रविम भाषा बोलते थे।
5. मोहन जोदड़ो–
   दुर्ग–(डवनदज ।क्)रक्षा प्राचीर निवास गृह चबुतरा अन्नागार। 150 ×75 फिट' – सभाभवन
6. हड़प्पा– हड़प्पा में मोहन जो0 के घरो की तरह गृहो में कुंए नहीं मिलते।
   बैरक– श्रमिक आवास
   अत्रागार– 6–6
   दुर्ग– Mound E
7. मकानो के दरवाजे मध्य में न होकर अंत में लगाये जाते थे। छतें भी लकड़ी की बनायी जाती थी जब कि सीढ़िया – पकी ईटो की बनती थी।
8. लोथक– अहमदाबाद सिलेके सरवावल नामक स्थान पर बना था।
9. समाज– मातृसत्तात्मक – विद्वान वर्ग, योद्धा व्यापारी शिल्प का अथवा भ्रमिक –चतुवर्ग
   लिपिसत्कि– चदुदगों से

(3)

1. पासा– यह सैन्धव का प्रमुख खेल था।
2. अस्त्र–शस्त्र– सामान्ययः ताबें व कांसे के बनते थे।
3. साहनी व मैके को मोहन जोदड़ो से चांदी के कलश में सूती कपड़ा मिला हैं। जब कि सैन्धव वस्त्र सूती व ऊनी दोनो में बनते थे।
4. धातु– सोना, चांदी, कांसा, तांबा, पीतल
   व्यापार– सैन्धव की सम्वृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार था।
1. व्यापार मुख्यतयः जलीय मार्ग से होता था।
2. सैन्धव– मैसूर से सोना, अजमेर से सीसा
   राजस्थान, वलुचिस्तान तथा मद्रास से ताँबा।
   काश्मीर एवं काढियाबाड़ से बहुमूल्य पत्थर आदि आयात करते थे।
   अफगानिस्तान व इरान से चांदी

(4)

1. सुमेर (मेसोपो0)बेबी लोनिया, फ्रांस तथा अफगानिस्तान से हड़प्पा की मुहरों से मिलती जुलती मुहर प्राप्त हुई हैं।
2. मोहन जोदड़ो की एक मुहर पर सुमेसिन ढंग की नावो के चित्र अंकित हैं। जिससे सुमेर व हड़प्पा के व्यापारिक सम्पर्क का संकेत मिलता हैं।
3. सुमेरियन लेबो से ज्ञात होता हैं कि उर नगर के व्यापारी मेलुहा(सिंघु) के व्यापारियो के साथ वस्तु विनिमय करते थे।
4. वहरीन दिलमुन की खुदाई में कुछ मुहरे मिली हैं। जिन पर सैन्धव लिपि में लेख अंकित हैं।
5. मेसोपोशमिया में प्रवेश के लिए प्रमुख बंदरगाह उर था।

6. हाथी दांत तांबा व लकड़ी – सैन्धव प्रचुर मात्रा में निर्यात करते थे।
7. उर की खुदाई में हड़प्पा के तांबे के श्रंगार दान मिले हैं।
8. मिश्र में हड़प्पा की गुरिया मिली हैं।

''धर्म''

सैन्धव धर्म का ज्ञान– मुख्यतः– मुद्राओ, मूर्तियो व प्रस्तुर प्रतिमाओ से होता हैं।
क्यों कि यहाँ किसी मंदिर, समाधि व वेदी का ज्ञान नहीं मिलता।

1. स्त्री की मूर्तिया या (मातृदेवी) (मोहन जोदड़ो)से प्राप्त यह करधनी हार कर्णफूल, कण्ठहार पहने हुए हैं।
2. नग्नारी– (हड़प्पा) इसके गर्भ से एक पौधा निकल रहा हैं। पृष्ठ भाग पर एक व्यक्ति चाकू लिये खड़ा हैं स्पष्टतयः यह मानव बलि का चित्र हैं।
3. मोहन जोदड़ो से प्राप्त योगी की मूर्ति– रुद्रशिव By मार्शल चीता, हाथी, गैंडा, भैसा–खुदाई में सूचयाकार व वर्तुलाकार लिंग मिले हैं।
4. ये जल स्वास्तिक स्तम्भ तथा चक्र को पवित्र मानते थे।

'' कला ''

1. मुद्राओ पर बैल भैंस तथा हाथी के चित्र मिलते हैं।
2. कांसे की नर्तकी की मुर्ति–हड़प्पा से
3. दो– बिना सिर की मानव मूर्ति– हड़प्पा से
   पहली लाल पत्थर की हैं दूसरी काले पत्थर की हैं।

'' अन्य ''

1. जनता से कर अनाज के रुप में लिया जाता था।
2. s.r राव ने सिन्धु लिपी को पढऋ लेने का दावा किया हैं।
3. सैन्धव ज्यामिती दशमलव भास्माय के पैमानो से भली भांति परिचित थे।
4. R. 37– हड़प्पा का समाधिस्थल
5. आंशिक समाधिकरण का संकेत– वहा बलपुर से मिलता हैं।
6. काल– 2500–1750 BC तक By
   2300–2000चरमोत्कर्ष
   विनाश
1. बाढ़ – दयाराम सासी सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल।
2. बाहय आक्रमण– इसका समर्थन पुरातत्व सम्बधी अवशेषो से होता हैं।

आर्य

विस्तार– सिन्धु, पंजाब, अफगानिस्तान के कुछ भाग

मूल निवास स्थान–

1. भारत–

मुल्तान (देविका)–D. s. त्रिवेदी

ब्रहमर्षिदेश– गंगानाथक्षा

काश्मीर तथा हिमालय – LD कल्ल

2. उत्तरी धुव्र– तिलक दीर्घ कालीन उषा के आधार पर 6 माह दिन 6 माह रात तिलक के अनुसार आर्यो ने ऋग्वेद की रचना सप्त सैन्धव में किया। आर्यो ने सप्तसैन्धव प्रदेश को देवताओ द्वारा निर्मित बताया हैं।
3. एशिया – भारोपीय भाषा परिवार के आधार पर।
1. मध्य प्रदेश– मैम्समूलर
2. पामीर का पठार– एडवर्डमेयर BY कीथ और ओल्डेन वर्ग

4. यूरोप–

1. जर्मनी – पेन्का टृर्ट– भाषा के आधार पर भूरे सुनहरे बाल
2. हंगवी– गाईडस
4. दक्षिणीकस– मेयर, पीक, गार्डन चाईल्डस– यही मत सर्वाधिक तर्क संगत हैं। यहाँ से खुदाई में अश्व के संकेत तथा आर्यो जैसे मृदभांड मिले हैं।

" ऋग्वेद "

1. 10 मंडल– 2 से 7 सर्वाधिक प्राचीन, 1 व 10 नवीन
2. भाग–

साकल– 1017 मंत्र

वालजित्य– 11 मंत्र

वाष्कल– 36 मंत्र (कुल 1664 मंत्र)

3. मजबूत– हिमालय की चोरी को ऋग्वेद अफगानिस्तान क नदिया– कुभा, क्रमु, गोमती सुवास्तु।
4. राजा– जन के अधिपति को राजा या जनपति कहा जाता था।
5. दूसरा युद्ध में पंच जनो के अतिरिक्त अन्य 5 जन अनिल, सम्य, भसानस, शिव, विषामिन यह यद उत्तराधिकार के लिए लड़ा गया था।
6. राष्ट्र शब्द मिलता हैं।
7. सुदास का पुरोहित वशिष्ठ था। और 10 जनो का विश्वामित्र

1–चौथे मंडल– पहले विश्वामित्र ही सुदास का पुरोहित था। लेकिन सुदास ने इसको हराकर वशिष्ठ को बनाया जिससे विश्वामित्र नाराज होकर संघ बनाया था।

विवाद– यह युद्ध मुख्यतः पश्चिमोत्तर भाग में बसे पूर्वकालीन जनो व ब्रह्मवर्त में बसे उत्तरकालीन जनो के मध्य उत्तराधिकार के लिए हुआ था।

2–ऋग्वेद में राजतन्त्र का प्रचलन था प्रारम्भ में राजा की चुनाव सारी प्रजा मिलकर करती थी। लेकिन बाद मकं यह पद अनुवांशिक हो गया।
राजा इस काल में भूमि का स्वामी नहीं था।
सभा– कुलीनो व वृद्धो की सभा।
समिति– सर्वसाधारण की समिति।
3–मृत्यु दण्ड की प्रथा नहीं थी– राज पुरोहित की सहायता से न्याय करता था। हत्या के अपराध में धन द्वारा मुक्ति मिल जाती थी।

समाज

(1) ऋज्रास्व– पिता द्वारा अंधा किया गया।
शुनः शेष– पिता द्वारा बेचा गया।
(2) व्रहम क्षत्र विश – 10र्वेमंडल में राजन्य (क्षत्रिय)शब्द आया हैं।
(3) कवि, वैद्य व आटा पीसने वाली ऋग्वेद 9 वे मंडल
(4) पत्नी अर्द्वागिनी–शवपथ ब्राहम्ण
(5) बाल विवाह व विधवा विवाह नहीं होते थे।
अंतर्जातीय विवाह होता था।
(6) वहतु– कन्या को विदाई के समय दिया जाने वाला उपहार एवं कर।
(7) पुनर्विवाह एवं नियोग प्रथा प्रचलित थी। गोद लेने की प्रथा थी।
(8) सती प्रथा का अनुमान स्त्री का मृत पति के पास लेटना। ऋग्वेद 10 वे मंडल
(9) लोपा मुद्रा घोषा विश्वतास ऋग्वेद
आर्यो के वस्त्र ऊन सूत तथा मृग चर्म के होते थे।

आर्थिक जीवन

(1) उर्वरा अथवा क्षेत्र– कृषि योग्य भूमि को 4,6,8,12,24 बैल एक हल में जोते जाते थे।
(2) ऋग्वैदिक आर्य– चावल से परिचित नहीं थे। हाथी से भी परिचित नहीं थे।
(3) वेकनाट– सूदखोर पक्षियो को कहा जाता था।
(4) भृत्यु की समुद्र यात्म का वर्णन तथा अश्विनीकुमारो द्वारा रक्षा। ऋग्वेद–100 पतवारो वाला जहाज
(5) शुद्रो के अतिरिक्त तीनो वर्णो के लोग चाहे जिस व्यवसाय को अपना सकते थे। शुद्र मात्र सेवा करते थे।

धर्म

1. Henotheism सर्वोच्च देव– आर्यो ने जिस समय जिस देवता की पूजा किया उसे ही सर्वोच्च मानकर उसी में सम्पूर्ण गुणो को आरोपित किया।
2. आर्य (ऋ0) पशु पूजा नहीं करते थे।
3. द्यावापृथ्वी– (पृथ्वीन आकाश) मित्र वरुण, उषा रात्रि

———————————

उत्तर वैदिक काल

1. ब्राहम्ण ग्रंथ– गघ में लिखे गये हैं।
2. अथर्ववेद में ममघ के लोगो को व्रात्य कहा गया हैं।
3. शतपथ ब्राहम्ण में कुरु और पांचारु (तुर्वशन क्रिपी) को वैदिक सभ्यता का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि माना गया हैं।

क. कुरु– इसकी राजधानी आसंदीवत थी। (कुरुक्षेत्र)
राजा – परीक्षित व जनमेजय

ख. पांचाल– राजधानी काम्विल्य
राजा – प्रवाहम, जैवालि, अरुणि, श्वेतकेतु। (शोनसा़वाह)

ग. विदेह– उपनिषद काल में विदेह पांचाल का स्थान ले लिया।

घ. उ0 वैदिक काल में– कुरु पाचांल काशी कोशल तथा विदेह प्रमुख राज्य थे।
मगध तथा अंग–(व्रात्य) इनका कोई स्थान नहीं था।

''राजनीतिक संगठन''

1. राजा की उत्पत्ति– देवताओ व असुरो का संग्राम, एतरेयव्राहम
2. अश्वमेघ व राजसूय जैसे यज्ञो का आरम्भ हुआ।
3. रत्नी– इनका उल्लेख यजुर्वेद में मिलता था।
4. वाजपेय यज्ञ के समय राजा स्वंय रत्नी के घर जाता था। और उन्हें रत्नवलि प्रदान करता था।
5. स्थापित एवं शतपति– ये दो अधिकारी थे। जो रत्नियो में नहीं आते थे।

रत्नी में– राजा के संम्बन्धी, मंत्री विभागाध्यक्ष एवं दरबारी गण आते थे।

स्थपित– यह सम्भवतः सीमास्त प्रान्त का अधिकारी था।

शतपति– यह सम्भवतः 100 ग्रामो को समूह का अधिकारी था।

6. अथर्ववेद में सभा व समिति को प्रजा पति की दो पुत्रियां कहा गया हैं।

समिति का राजा पर वर्चस्व रहता था उसका भविष्य उसी पर निर्भर था। यही केन्द्रीय व्यवस्थापित के समान थी।

7. शतपथ ब्राहम्ण में चारो वर्णो के सम्बोधन के अंग तथा अन्तेष्ठि के टीलो का वर्णन हैं।

शतपथ ब्राहम्ण में विकल्य स्वरुप क्षत्रियो को ब्राहम्ण से श्रेष्ठ बताया गया हैं।

8. समाज में अश्ष्टयता का उदय अभी तक नही था।

शुद्रो को भी दर्शन के अध्ययन का अधिकार था। By– सत्यकाम जावालि की कथा– उपनिषद,

आर्थिक जीवन

1. शतपथ व्रा0 में कृषि चारो क्रियायो – जुताई, बुताई, कटाई, मढ़ाई का उल्लेख हैं। 24 बैलो वाला हल – काठक संहति
2. धातु– सोना, चांदी लोहा, टिन, तांबा, सीसा से परिचित।
3. गंधार, वलूचिस्तान, पूंजी पंजाब, प0 उत्तर प्रदेश में 1000Bc के आसपास लोहे का प्रचलन।

7 वीं एवं 6 वीं Bc में पूवी यू0 पी0 मं व गंगाधारी में लोहे का प्रयोग उ0 वैदिक सा0 लोहा को (कृष्ण अयम)कहा गया हैं।

''धर्म''

1. मूर्तिपूजा का उल्लेख– वरुण, इन्द्र व अग्नि का स्थान प्रजापति शिव ने लिया। संस्कार द्विजशवद, अष्पृश्यता व संन्यास आश्रम का विधान सर्वप्रथम सूत्र साहित्य में किया

मौर्य युग

1. सैन्ड्रोकोटस व एन्ड्रोकोटस की चन्द्रगुप्त मौर्य से समता सर्वप्रथम विलियम जोन्स ने किया।
2. अशोक के अबतक लगभग 37 अभिलेख मिले हैं।
3. मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त को वृषक तथा कुलहीन कहा गया हैं।
4. महावंश में चन्द्रगुप्त को मोरिय नामक क्षत्रियवंश में उत्पन्न कहा गया हैं।

जैनग्रंथ– परिशिष्ट पर्वत में भी क्षत्रि कहा गया हैं।

5. अशोक के लौरियानंदन गढ़ के स्तम्भ के नीचे के भाग मे मयूर की आकृति उत्कीर्ण हैं।

''मयूर'' मौर्यो का राजचिन्ह भी था।

6. जस्तिन– च0 मौर्य को/ सामान्य कुलोत्वन मानता हैं।

''चन्द्रगुप्त''

1. अर्थशास्त्र के सैनिकवर्ग–
   क. चोर अथवा प्रतिरोधक
   ख. म्लेच्छ
   ग. चोरगण
   घ. आरविक
   ड़. श्स्त्रोपजीवी
2. चन्द्रगुप्त व नंदराज घनानंद के मध्य युद्ध की वर्णन– मिलिन्दपधे में मिलता हैं।
3. तमिलपरम्परा जैनग्रंथ व अशोक के अभिलेखो से चन्द्र की द0 विजय का ज्ञान होता हैं।
   तमिलपरम्परा के अनुसार चन्द्र ने मोहर के राजा पर आक्रमण किया– इस अभियान में उसे कोशर व वडडगार नामक दो मित्र जातियो की मदद मिली।
4. पश्चिमी विजय का उल्लेख (गिरनार लेख)के अभिलेखो से होती हैं।

साम्राज्य सीमा– उत्तर पश्चिमी में इरान की सीमा से लेकर दक्षिण में–कर्नाटक तक पूर्व मे मगध से पश्चिम में सुराष्ट्र तथा सोपारा तक विस्तृत था।

प्रशासन

1. कौटिल्य– राज्य के सप्तांगो में राजा को ही सर्वोच्च स्थान प्रदान करता हैं।
2. अमात्यया सचिव– यूनानी इसे सभासद तथा निर्धारक

Counciuors amd Assessers कहते हैं। यह राज्य के सभी प्रमुख अधिकारियो की सामान्य सेना थी।

3. मंत्रिपरिषद के सदस्यो को 12000 पग वेतन मिलता था।

मंत्रिगण– के सदस्यो को (3–4) 48,000 वार्षिक वेतन मिलता था।

4. कौटिल्य के अनुसार– राजवृत्ति 3 प्रकार की होती हैं। प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, अनुमेय
5. तीर्थ– 18 प्रकार

केन्द्रीय प्रशासन अनेक विभागो में बँटा था– प्रत्येक विभाग को तीर्थ कहा जाता था।

1. प्रशास्ता– राजकीय कार्पो को सुरक्षित रखने वाला तथा राजकीय भाज्ञाओ को लिपिवद्ध करने वाला प्रधान अधिकारी।
2. आरविक– वनविभाग का प्रधान अधिकारी।

3. प्रदेष्य– फौजदारी न्यायालय का न्यायाधीश।

4. व्यवहारिक– दीवानी न्यायालय का न्यायधीश।

6. अध्यक्ष– (मजिस्ट्रेट) ये भी अमात्यो में से ही नियुक्त किये जाते थे। इन्हें 11000 वार्षिक वेतन मिलता था। तीर्थ– शायद अमात्यो में नहीं चुने जाते थे।

'' प्रांतीय ''

1. प्रान्तीय राज्यपालो को 12000 पन वार्षिक वेतन मिलता था।

विभाग – विषय या आधार

साम्राज्य – राज्य, मंडल,

राज्य – राज्यपाल, प्रदेष्टा।

– गांव –

स्थानीय – 800ग्राम

क्षेत्रमुख – 400ग्राम

खार्वरिक – 200 ग्राम

संग्रहण – 10 ग्राम

(ये युक्त पदाधिकारी की सहायता से अपना कार्य करते थे।)

एग्रोनोओई – मेगस्थनीय जिले के अधिकारियो को कहा हैं।

नगर – इसका शासक नागरक अथवा पुर मुख्य कहा जाता हैं।

मेगस्थनीय नग के शासको को (एगिस्तनोमोई)कहा हैं।

ग्राम – ग्रामणी– यह ग्राम वासियो द्वारा निर्धारित था। वेतन भोगी नहीं था।

'गोप' नामक सरकारी कर्मचारी द्वारा राजस्व एकत्रित करने में ग्रामणी सहायता करता था।

1. न्याय – कैद, कोईमासा, अंगभंग, मृत्युदंड की सजा का प्राविधान था।

न्याय स्त्रोत– धर्म व्यवहार, चरित्र, राजशासन

2. गुप्तचर – युनानी ने नीरिक्षक तथा ओवर सियर कहा हैं।
3. सेना – 6 लाख पैदल, 30 हजार अश्वरोधि, 9 हजार हाथी, 800 रथ

अशोक

1. भावू अभिलेख– इनमें अशोक बौद्ध धर्म संघ का अभिवादन करता हैं।
2. सारनाथ सांची कौशाम्बी – बौद्ध धर्म के रक्षक के रुप में
3. अशोक सर्वप्रथम – बोधिगया की यात्रा किया था। (अभिषेक के 10 वे वर्ष)
4. आसिनव प्रचडता, निष्ठरता, क्रोध, घमंड ईर्ष्या।
5. धर्म महामात्र– 5 वे अभिलेख में नियुक्ति का उल्लेख
6. अशोक तथा चन्द्रगुप्त द्वारा सुदर्शन क्षील का निर्माण व मरम्मत का उल्लेख– रुद्रदामन के गिरफ्तार(150AD) अभिलेख से होता हैं।
   पुनः इस क्षील का उल्लेख स्कन्दगुप्त के जुनागढ़ अभिलेख में भी मिलता हैं।
7. 13 वें शिला लेख में 5 यवन सत्थो के दरबार में राजदूत भेजने का उल्लेख मिलता हैं।
8. धौली और जौगढ़ (उड़ीसा) शिला लेखो को – ''पृथक कलिंग प्रज्ञापन'' कहा गया हैं।
9. 14 शिला लेख– 7 स्तम्भ लेख–
   कौशाम्बी व प्रयाग– रानी का अभिलेख– कारूवाकी
   <u>लिपि</u>
1. शहवाज गढी मानसेहरा– खरोवढी लिपि
2. शरेकुना (कल्देधर) लक्ष शिला लद्यमान– अरामेईक लिपि
3. शरेकुना से– यूनानी लिपि में भी
10. अशोक की उत्तारिधकारी– कुषाक हुआ था।
11. राजा सम्पत्ति – जैन धर्मवलम्बी थी
12. परवर्ती मौर्य शासको में 'शालिशूक' यह भी घोर बौद्ध मतानुयायी थी इसे घोर अत्याचारी कहा गया हैं।

विविध

1. मौर्यकाल में एक जनगणना विभाग स्थापित किया गया था।
2. अर्थशास्त्र के अनुसार– ब्याजदर 15प्रतिशत वार्षिक थी।
3. श्रमण– संन्यासियो को भ्रमण कहा जाता था।
4. भद्रवाद– निग्रंथ जैन था।
5. यूनानी लेखो में वासुदेव की पूजा का उल्लेख 'हेराम्लीज' नाम से किया गया हैं।
6. प्राकृति (पाली) भाषा मौर्यो की राजभाषा थी। आम जनता की भाषा भी वाली थी।

———————————————

कला

1. मौर्ययुग में सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
2. स्ट्रेवो– पाटलेपुत्र के राजमहल का वर्णन करता हैं।
3. कुम्भहार की खुदाई का श्रेय 'स्यूनर' को हैं।
4. सारनाथ स्तम्भ हाथी, घोड़ा, सिंह व बैल की आकृति उत्कीर्ण हैं।
   हाथी– स्वप्न व विचार का , बौल– जन्म का
   अरब गृह त्याग का, सिंह सार्वभौम सत्ता का प्रतीक हैं।
5. हर्मिका– जो स्तूय के ऊपर बनायी जाती थी जिसमें धातुपात रखा जाता था– का (देवसदन)देवताओ का निवास स्थान कहा गया हैं। हर्मिका के ऊपर 'यहिट' लगायी जाती थी।
6. वरावर की गुफा– सुदामा व कर्ण चौपारि की गुफा– अशोक
   नार्गाजुनी गुफा– लोम ऋषि व गोपिका गुफा– दशरथ (आजीवन सम्प्रदाय के लिए)

कला

1– शुंगकालीन

1. भरहुत, सांची, बोधगया, वेसनगर

क. भरहुत– 1873 में कनिंधम ने इस स्तूप को खोजा था। यह अपने मूल रूप में नहीं हैं।
इसी स्तूप पर कोशल नरेश प्रसेनजित व मवध नरेश अजात शत्रु को– भगवान बुद्ध की वंदना करते हुए दिखाया गया हैं।
ख. सांची– शुंगकाल में सांची में तीन स्तूपो का निर्माण हुआ। एक महास्तूप का तथा छोटे– छोटे स्तूपो का।

1. महास्तूप– इसमें भगवान बुद्ध का अवशेष सुरक्षित हैं।
2. दूसरे में– अशोक कालीन धर्मप्रचार का अवशेष।
3. तीसरे में– सारिपुत्र तथा महामौद गस्यापन का अवशेष

महास्तूप का निर्माण– अशोक ने इंटो से बनवाया था। लेकिन शुगो ने पाषाण पारिकाओ से जढा गया तथा वेदिका बनायी गयी।
ये तीनो स्तूप आज भी सुरक्षित हैं।

2– सातवाहन कालीन

1. अमरावती स्तूप– इस स्तूप का पता 1797 में कर्मेकेची ने लगाया था। इस स्तूप की वेदिका संगमरमर की थी वह अपने मूलरूप व मूलस्थान पर नहीं हैं।
2. चैत्य व विहार – भाजा, कार्ले, कहेरी आदि। चैत्य थे। कार्ले का चैत्य गृह सबसे सुरक्षित और सबसे बड़ा हैं।

3– गुप्तयुग

1. मंदिर

क. लिगवामंदिर (जबलपुर)– विष्णुमंदिर

ख. भूमरामंदिर (सतना)– शिवमंदिर

ग. नचनामंदिर (पत्रा)– पार्वतीमंदिर

घ. खोह (सतना)– वैष्णवमंदिर

ड. भीतरगांव (कानपुर)– वैष्णवमंदिर (ईटो से निर्मित)

चित्रकला

(1)अजंता– औरगांबाद के 'महाराष्ट्र' में स्थित 29 चित्र थे, अब मात्र 6 बचे हैं।

1. 1–2 – सातवीं शदी AD – पुल के शिन 2 फारसी दूत का स्वागत
2. 9–10 – प्रथम शताब्दी BC – बोधिसत्व के सुदंर चित्र।
3. 16–17 – गुप्तकालीन

16 वी गुफा चित्र – ''मरणासन राजकुमारी''

17 वीं गुफा चित्र – ''माता और शिशु'' '' Baby – Mother ''

इसमें बुद्ध की पत्नी और पुत्र को समर्पित कर रही हैं।

(2) वाघ की गुफा – यह मध्य प्रदेश के ग्वालियर के समीप विन्ध्याचंल की पहाडियो को काटकर बनायी गयी थी। इसका पता 1818 में डेंजर फील ने लगाया था। इसमें कुल 9 गुफा चित्र हैं। इनका विषय धार्मिक न होकर लौकिक जीवन से हैं।

————————————————————

49

व्यापार व वाणिज्य

(Pre and Post Period)

1. मौर्यो ने पाटलिपुत्र से तक्षशिला तक एक राजपथ का निर्माण करवाया था। जो आधुनिक G. T. रोड हैं।
2. तक्ष शिला– पश्चिमी एशिया और यूनानी जगह से व्यापार मूलतः तक्ष शिला से होता हैं।
3. तमिल अभिलेखो में रोमनो के लिए 'यवन' शब्द का प्रयोग किया था।
4. सदलपुत्र– यही कुम्भकार श्रेणी का था।
5. विदिसा की एक हस्तंदत शिल्प श्रेणी में– सांची स्तूप के चारो ओर कठघरो व प्रवेशद्वारो पर पाषाण शिल्प का उत्कीर्णन किया था।
6. नासिक का पाषाण अभिलेख– बुनकर श्रेणी का मंदिर को दान देने का उल्लेख मिलता हैं।
7. गुप्तकाल में– कपड़े का निर्माण सर्वप्रथम उद्योग था।
8. यदि गुप्तधन या खान किसी ऐसी जमीन में निकल आती हैं। जो पहले से दान में दी गयी हैं। तो उस पर दानग्रहीता का हक होता था। सामान्यतः भूमि रत्न खान आदि पर राजा का ही अधिकार होता था।
9. गुप्तकाल में केवल ब्राहम्णो मंदिरो आदि को ही भूमिखंड दान में दिया जाता था अधिकारियो को नहीं।

   अधिकारियो व समितियो का भूमिखंड का दान दिया जाना हर्ष के समय से ही प्रचलित हुआ।
10. अमर कोध में 12 प्रकार की भूमि गिनाई गयी हैं।
11. वराह मिहिर की व्रृहतसंहिता में– हीरा, मोती, मणिक आदि अनेक उद्योगो का वर्णन हैं। अमर कोख में कताई, बुनाई हथकरहण उद्योग की चर्चा हुई हैं।
12. नारद व बृहस्पति स्मृति में श्रेणियो की चर्चा हैं।
13. गुप्त साम्राज्य के विभिन्न भागो से अवत 16 ढेर सिक्को के प्राप्त हुए हैं– जिनमें वयाना, कुमारगुप्त (भरतपुर) सबसे महत्वपूर्ण हैं।

    परवर्ती कालीन गुप्त मुद्राओ का भार तो बढ़ता गया लेकिन उसमें सोने का अंश गिरता गया। गुप्तो ने सोने के सिक्के – चांदी तथा तांबे के सिक्को से ज्यादा प्रचलित करवाये।
14. मंदसौर अभिलेख– रेशम की श्रेणी – लाट से मालवा (दसपुर) चली गयी थी।

चीन के साथ व्यापार– गुप्तयुग

चीन के साथ व्यापार में श्री लंका बिचोलिये का काम करता था।

भारत तथा चीन के मध्य व्यापार– अदल बदली पर आधारित होता हैं। क्यों कि न तो भारत के सिक्के चीन में मिलते हैं। और न चीन के सिक्के भारत में मिलते हैं। चीन से मुख्यतः रेशम आयात होता था।

1. गुप्तो के युग में द0 पूर्वी एशिया के साथ व्यापार का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

'' विजय नगर साम्राज्य ''

क. **सामाजिक दशा–** समाज वर्णव्यवस्था पर आधारित था– अभिलेख, साहित्य, यात्रा विवरण,

'' सकल वर्णाश्रम धर्म मंगललानुपात्ति सुत्त'' – अभिलेख

अर्थात्– समस्त वर्णो के मंगल या कल्याण का उल्लेख।

1. ब्राहम्ण– वर्रेण्य– सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, मृत्युदंड नहीं – करमुक्त– भूमिअनुदान आदि।
2. क्षत्रियों का उल्लेख नहीं।
3. मध्य वर्ग– (वैश्य) क शेट्टीया चेट्टी– व्यापार वाणिज्य

पुर्तगाली यात्म वारवोसा लिखता हैं कि– ''वे बहुमत धनाढ़य और सम्मानित हैं। तथा बहुत साफ जीवन व्यतीत करते हैं।

ख. वीर पांचाल– व्यापारी व दस्तकार

ग. बड़वा– उत्तर भारत से जाकर दक्षिण भारत में बस गये।

4. निम्न जाति के लोगो द्वारा उच्च जाति के विशेषाधिकारो की अपयना। सामाजिक तनाव।

ख. दासप्रथा– वेस–वग (क्रय– विक्रय) दासमंडी

ग.गणिका(वैश्या)– सार्वजनिक उत्सव में गणिकायें भाग लेती थी। राजा संपर्क रखता था।

महत्वपूर्ण स्थान,– देवदासी प्रथा, चारो वर्ण से स्वतंत्र जीवन यापन

घ. स्त्रियों की दशा– भोग की वस्तु– निम्न स्थान– बहुविवाह, कन्यादान

लेकिन अभिजात वर्ग की स्त्रियो का ऊचाँ स्थान था।

शिक्षा – नृत्य– राजनीति आदि का प्रबन्ध।

नूनिज लिखता हैं– उसके राजा के पास (विजयनगर) ज्योतिषि प्रदाप या प्रचलित नहीं थी। सती प्रथा प्रचलित थी।

1354 माला गौड़ा अभिलेख से सती प्रथा का प्रणाम।

सती स्मृति– पाषाण स्मारक

ड. वेशभूषा आभूषण– खान पान धोती कुर्त्ता

च. शिक्षा का प्रंबध नहीं

5. मंदिर– सामाजिक जीवन के केन्द्र
6. मनोरंजन– नाटक, यक्षगान, शतरंज, पासा–

बोलमार व छापा नाटक– विशेष प्रचलित था।

सामाजिक समस्या

1. **दहेज की समस्या–** दहेज विरोधी अधिनियम–1424–25 दहेज लेना देना दोनो अपराध।
2. **दस्तकारी–** लोहार, बढ़ई व स्वर्णकार– विशेषाधिकार सम्पन्न
3. **अन्य–** मंदिर की भूमि पर अतिक्रमण, ब्राहम्ण व पत्नी हत्या, देव भोग में अपराध– अपराधी की सम्पत्ति जब्त कर ली जाती थी।

51

प्रशासन

चोल, चालुम्य के पतन के बाद बदली हुई राजनीतिक सामाजिक व धार्मिक परिस्थितयो के आधार पर, एक नवीन राजव्यवस्था का सूत्र पात। 'ग्रामीण स्वायत्रता का हास'

क. केन्द्रीय प्रशासन– राजा,– राजातंत्रात्मक व्यवस्था– राज्य का सप्तांग सिद्धान्त– राज्याभिषेक– प्रजापालन की शपथ

1. राजा– कार्यपालिका न्यायपालिका व सेना का प्रधान होते हुए भी निरंकुश नहीं था।

आमुक्तमात्यदा में कृष्ण देवराय कहता हैं – एक मूर्धाभिषिक्त राजा को सर्वदा धर्म को दृष्टि में रखकर शासन करना चाहिए।

2. युवराज का पद–
3. संयुक्त शासक परम्परा– हरिहर वुक्का, विजयराय देवराय
4. संरक्षक व्यवस्था– वीरनर सिंह, नारसा नायक, रामराय
5. मंत्रिपरिषद– अध्यक्ष,–प्रधानी या महाप्रधानी
6. सचिवालय– रायसम,(सचिव)कणिकम

प्रांतीय प्रशासन–

साम्राज्य+ मंडलम+ वलनाड् या कोट्टम्+ नाडू+ मेलाग्राम

नायक(प्राक्तपति)– अधिकार– सिक्के जारि करना, नया कर लगाना, भूमि दान देना, सेना रखना।

1. नायंकार व्यवस्था– भूमिखंड सेवा के बदले– सैनिक व असैनिक अधिकारियो को अमरम् (अम्ता) अमरनायक–(आम्ता दार समान्त)

कार्य– सामंतो की तरह

महामंडलेश्वर– (अच्छुत देवराय) अमरनाय को पर अंकुश के लिए

स्थानीय प्रशासन–

ग्रामीण स्वायेत्तता– उद्ध, समा महासभा, महाजन

कार्य– चोल कालीन

पतन– कारण– आयगार व्यवस्था (12 व्यक्ति) अत्रुवांशिक

राजस्व व्यवस्था–

भूमि के प्रकार–

क. भंडारवाद– राज्य के अधीन खालसा।

ख. अमरण– आचरण नायक

ग. भूमि दान– वहमदेय (ब्राहम्ण) मठापुर (मठ) देवदेव मंदिर कामुक्त कर– शिष्ट (भूमिकर)

भूमि के प्रकार– भीगी जमीन, सूखी जमीन, वाग जंगल

अन्यकर– सम्पत्तिकर, विक्रयकर, व्यवसायकर, विवाहकर, कारीगरी, शिल्पियो चर्मकारो, नापितो, भिखारियो व वेश्या को पर कर।

'' न्याय व्यवस्था ''

दण्ड– जुर्माना, सम्पत्ति जब्ती, मृत्यु, दैव पहीसा। चोरो व्याभिचार, राजद्रोह– मृत्युदंड

''सैनिक व्यवस्था''

कन्दाचार (सैनिक विभाग) दण्डनायक सेनापति

अमरनायको की सेना–

''अपनी प्रजा की सुरक्षा व कल्याण के उद्देश्य को सदैव आगे रखो तभी प्रजा राजा के कल्याण की कामना करेगी। और राजा का कल्याण तभी होगा जब प्रजा समृद्धिशाली हो। – आयुक्त माल्पदा

कुषाण– Polit, Craft, Trade, amd Towns Religious Deelopment ,Art

शासन प्रबंध– कुषाणो ने अपनी अनेकानेक विषयो के फलस्वरूप एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था। लेखो तथा सिक्को के आधार पर उनका साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में विन्धयपर्वत तथा पश्चिम में उत्तरी अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में पूर्वी यू0 पी0 एवं विहार तक विस्तृत था।
लेखो में कनिष्क को 'महाराजाधिराज देवपुत्र' कहा गया हैं। इससे सूचित होता हैं कि वह अपनी देवी उत्पत्ति में विश्वास करता था।
प्रशासन में सामन्तीकरण की प्रकिया इसी काल से आरम्भ होती हैं।
कनिष्क अपने सम्राज्य को अनेक क्षत्रपतियो में विभाजित किया था–

महाक्षत्रप

कभी–कभी एक ही प्रदेश पर दो क्षत्रय शासन करते थे। यह प्रथा कुषाणो की अनोखी थी।
लेखो में किसी सलाहकारी परिषद का उल्लेख नहीं मिलता
कुषाण लेखो में पहली बार– दण्डनायक व महादण्ड नायक जैसे पदाधिकारियो का उल्लेख मिलता हैं।
ग्राम का शासन ग्रामिक द्वारा चलाया जाता था।

शिल्प– व्यापार तथा नगर

1. नगर– नगरी करण का आरम्भ वैशाली, पाटलिपुत्र, वाराणसी, तक्षशिला, कौशाम्बी, श्रावस्ती, मथुरा,गंधार, हस्तिनापुर, इन्द्रपस्थ आदि
   नगरी करण के बाद– रोमन व्यापार– मार्गो पर सुरक्षा का प्रबंध वांशिक समुदाय का उदय या मेत्रीव्यापार
2. व्यापार– आंतरिक व बाहय्
   मध्य एशिया, प0 एशिया, रोम के साथ

रेशम मार्ग– पहले चीन का रेशम – इरान तथा अफगानिस्तान से होकर रोम सीधे जाता था। जिसे रेशम मार्ग कहा जाता था। परन्तु रोम तथा पार्थिया से सम्बंध कटु होने के कारण यह मार्ग अवरुद्ध हो गया। – कुषाण मध्यस्थ

3. Relgious Devolpment – महायान व हीर खान का विवरण
4. कला– गंधार व मथुरा।
   सातवाहन

कला– अमरावती व नागार्जुन कोंडा का स्तूप
चैत्य गृह व विहार का निर्माण
– कार्ले, भाजा, नासिक, कन्हेरी।
नगर– तगर, प्रतिष्ठान नासिक, जुन्तर घात्यकटक अमरावती नागार्जुन कोंडा, सोपारा आदि।

" सूफी "

इस्लामी रहस्यवाद को सूफी धर्म या सम्प्रदाय कहा जाता हैं। मुस्लिम रहस्यावाद का जन्म व्हादतुज वजूद अथवा आत्मा– परमात्मा की एकता के सिद्धान्त से हुआ हैं। परमात्मा में लीन हो जाने को– सूफी मारिफाट या वस्ल कहते हैं। परमात्मा में लीन होने के लिए उन्हें 10 अवस्थओ से गुजरना पड़ता हैं।
तौबा, विरक्ति, जुहुद(पवित्रता), फक्र, सब्र, शुक्र, खौफ, रजा, संतोष, रिजा।
अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सूफी स्वेच्छा पूर्वक भोतिक विलासिता का जीवन त्यागकर निर्धनता का जीवन यापन करते थे।
भारत में आने के पूर्व– राबिया, मंसूर बिन हल्लाज
भारत के बाहर उनका जो भी स्वरूप रहा हो लेकिन भारत में आने के बाद उन्होने वेदान्त, बौद्ध तथा जैन की अनेकानेक पद्धतियो को अपनाया।
जैसे– उपवास, कायाक्लेष– चिल्का माकस, शांति सत्य अहिंसा योगपद्धति।
सूफीयो के दो लक्ष्य थे–
क. अपनी आध्यात्मिक उन्नति करना।
ख. इस्लाम व मानवता की सेवा करना।

1. वे धर्म परिवर्तन में विश्वास नहीं करते थे।
2. प्रवचन के लिए हिन्दी का प्रयोग करते थे।
3. संगीत प्रेमी थे।

सूफी– 12 सिलसिल – खानखाह पद्धति
पीरी– मुरीदी
दो सिलसिले 1.वान्शार 2. वेन्शार
वाशर– 1–चिश्ती 2–सुहरावर्दी

1. चिश्ती– ख्वाजा मै0– वख्तियार कोकी–

हासी अधोयत– फरीयुदीन गंजशकर– निजामुद्दीन औलिया
नासिरुदीन चिरागए–दिली

2. सुहरावर्दी– शहावुदीन सुहरावर्दी हमीद– उददीन नागैरि यहादुदीन जकारिया पंजाब मुल्तान
3. फिरदौसिया– शेख शर्फुदीन यहया– विहार
4. कादिरीया– शाहनियामत तुस्ला
5. नम्शंवदिया– ख्वाफ वजि विल्लाह शेहअहमद अराहिदी

साहित्य–

संस्कृति– रामानुज, वल्लभा, मानवाचार्य को दार्शनिक रचनाये
मिटाक्षरा विज्ञानेश्वर हेमचन्द्र
यूसुफ जुसेखा (जामी)– संस्कृत में अनुवाद
फारसी– 'लाहौर' अमीर खुसरो– भारतीय शैली
जिया नक्शकी– तूती नाम – यह संस्कृत से फारसी अनुवाद थी।
फिरोज के समय– चिकित्सा व संगीत की पुस्तको का फारसी में अनुवाद
कश्मीर– जैनुस आवेदन – महाभारत व राजतंसिय का फारसी अनुवाद।

———————————————————————————————————

'' सामंतवाद ''

1. पूर्व मध्यकाल में– इस व्यवस्था में मुख्य स्थान उन सरदारो का था जो अपनी सेना के माध्यम से भूमि के भूभाग पर अधिकार करते थे।
   प्रशासन में प्रमुख भूमिका
   राजा की सैनिक सहायता–
   उप सामंती प्रथा–
2. उत्पत्ति– शक, कुषाण व सातवाहन काल में सामंती प्रथा के चिन्ह।

क. R. S. Sharma – भूमि अनुदान के कारण, ब्राहयको व सैनिक अधिकारियो
पहले मात्र ब्राहम्णो को– हर्षकाल के बाद सैनिक व प्रशासनिक अधिकारियो
भूमिदान का प्राचीन अभिलेखीय प्रमाण–
प्रथम सदीं (सातवाहन काल)

1. गृहीता को राजस्व के समस्त साधनो का घंटातरण
2. सुरक्षा व प्रशासन

ख. बाहय् आक्रमण– हर्ष व गुर्जर प्रतिहारो के बाद रोमिया था
राजनीतिक विकेन्द्रीकरण– केन्द्रीय व गुर्जर प्रतिहारो के बाद अरब– तुर्क आक्रमण के कारण इनकी सत्ता और दुर्बल हुई फलस्वरूप उत्तरी भारत में कई छोटे– छोटे राजवंशो का उदय हुआ। इससे सामती प्रथा को बढ़ावा मिला।
ग. आर्थिक कारण– गुप्त व हर्ष काल के बाद राजनीतिक उथल पुथल के कारण व्यापार तथा साहित्य का पतन– अर्थव्यवस्था कृषि आधारित हो गयी। जिससे समाज में भू सम्पत्र कुलीन वर्ग उत्पन्न हुए। ये भू सम्पन्न वर्ग अधिकाधिक मजदूर रखने लगे।
विकास– हर्षकाल

1. अपरिमित विभूत स्फीत सामंत सेना। ऐहोकअभिलेख
2. करदीकृत महासामन्त– हर्षचरित्र
3. हर्षचरित्र में– छः प्रकार के सामंत–

सामंत, महासामन्त, आप्तसामंत, प्रधानसामंत, शत्रुमहासामंत, प्रतिसामंत।
ख. राजपूत काल– चरमडकर्ष
राजपूतो के राज्य कई छोटी छोटी जागीरो में बटे थे। प्रत्येक का शासक एक सामंत होता था। चाहमान शासक पृथ्वीराज के अधीन– 1500 सामंत थे।
चालुक्य कुमार पाल के अधीन– 72
मानसार नामक ग्रंथ में सामंतो की नौ श्रेणियो का उल्लेख हैं। अपराजित पृच्छा में ग्रामाधिकार के आधार पर सामंतो की निम्प श्रेणिया बतायी गयी हैं।

01. महामन्डलेश्वर – एक लाख ग्राम
02. मांडलिक – 50 हजार ग्राम
03. महासांमत – 20 हजार ग्राम
04. सामंत – 10 हजार ग्राम
05. लघु सामंत – 5 हजार ग्राम

सामंत के कार्य –

1. जागीरी क्षेत्र में शांति व व्यवस्था बनाये रखना।
2. राजा को सैनिक सहायता उपलब्ध कराना। तथा वसूलू गये राजस्व के एक भाग को राजा को भेजना।
3. दरबार में समय– समय पर उपस्थित होना व निष्ठा प्रकट करना।
   उपसामंत–

" पुलकेशिन– 2 "

छठी शताब्दी के मध्य से लेकर 8 वीं सदी के मध्य तक दक्षिण पथ पर चालुक्य वंश की जिस शाखा का अधिपत्य था। उसे वादामी अथवा वातायी का चालुक्य कहा जाता हैं। इसी शाखा को पूर्व कालीन पश्चिमी चालुम्य भी कहा जाता हैं।

1. पुलकेशिन – यह कदम्बो से अपनी स्वतंत्रता घोषित किया था। पूर्वज (जयसिंह व रणराग)

उपाधि– श्री वल्लभ– अश्वमेघ यज्ञ व वाजपेय यज्ञ

2. कीतिवर्मन– मंगकेश
   अपने भ्रता को अपने अवयक पुत्र–पु0 का संरक्षक बनाया।– गृहयुद्ध
3. पुलकेशिन2– 6210–642
   विजये– ऐहोज प्रभाति से भौगोलिक क्रमानुसार
   1. गोविन्द व आप्यायिक
   2. कदम्ब–वनकासी
   3. गंग व आयुप
   4. लार मालव, गुर्जर
   5. हर्ष
   6. त्रिमहाराष्ट्रो पर विजय– कर्नाटक
   7. महेन्द्र वर्मन (पल्लव)

ऐहोल– अनेक युद्धो के विजेता उद्वत पु0 की सेनाओ के कारण उठी धूल से पल्लव नरेश का प्रताप आच्छादित हो गया। तथा वह काची पुर की दीवारो के पीछे जा छिपा।

———————————————————————————————————————